जीवन-संदेश

[ख़लील जिब्रान के 'दि प्रोफ़ेट' का अनुवाद

परिचयकार

श्री काका कालेलकर

अनुवादक

श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी'

श्री किशोरीरमण टण्डन

सस्ता साहित्य मंडल

नई दिल्ली

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय, मंत्री
सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।

दूसरी बार : १९४७
मूल्य
सवा रुपया

मुद्रक
अमरचन्द्र
राजहंस प्रेस, दिल्ली, २८-४७ ।
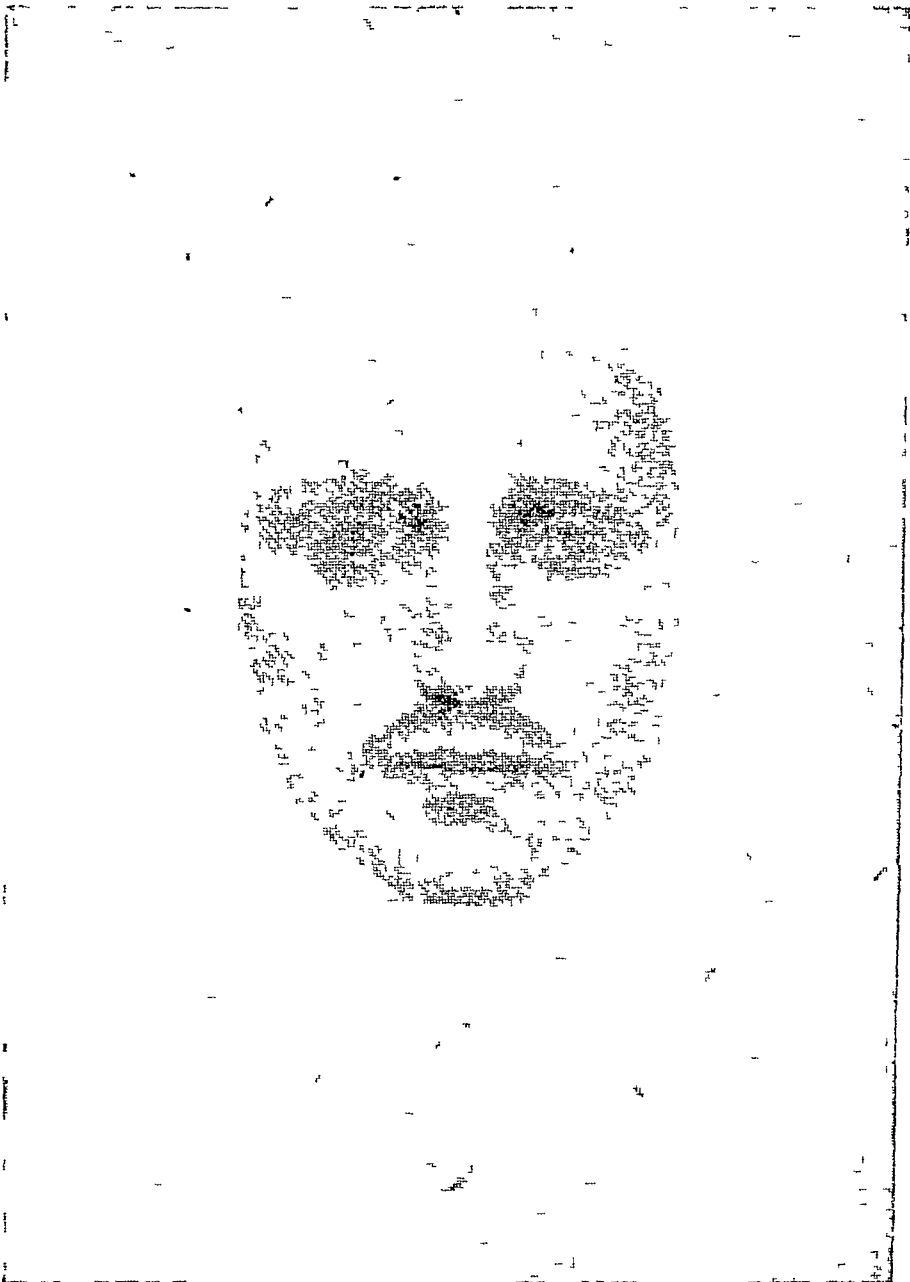
कवि

[एक परिचय]

सन् १८८३ ई० मे सीरिया देश के माउन्ट लेबनॉन प्रांत के एक सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित घराने मे कवि खलील जिब्रान का जन्म हुआ था। वह बारह वर्ष की अवस्था मे अपने माता-पिता के साथ बेल्जियम, फ्रांस और अमेरिका की सैर करने गये और दो वर्ष बाद लौटकर आए, तभी उन्हे बेरुत के अल-हिकमत मदरसे मे दाखिल कराया गया जहाँ उन्होने अरबी साहित्य का गहरा अध्ययन किया। तभी वह अरबी मे कवितायें भी लिखने लगे और थोडे ही समय मे उनकी गणना अरबी के महान् साहित्यकारों मे होने लगी। सन् १९०३ ई० मे वह पुनः अमेरिका गये जहां उन्होने अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन शुरू किया। पांच वर्ष बाद वह फ्रांस चले आए जहां उन्होंने चित्र-कला का अभ्यास किया। सन् १९१२ ई० मे वह फिर अमेरिका गये और जीवन के अन्त तक न्यूयार्क में ही रहे।

अमेरिका मे रहकर करीब १९१८ ई० से उन्होने अंग्रेजी में लिखना शुरू किया और तब से उनकी ख्याति सिर्फ अंग्रेजी भाषा-भाषी जनता मे ही नही बल्कि अनुवाद द्वारा सारे संसार मे फैल गई और अब तक करीब पच्चीस भाषाओं मे उनकी पुस्तको के अनुवाद हो चुके हैं।

उनकी तमाम पुस्तकें स्वयं उनके बनाये चित्रों से विभूषित हैं। उनकी चित्र-कला उनकी अपनी चीज है, जो गूढ होते हुए भी सजीव एवं एकरूप है। इन चित्रों का प्रदर्शन पश्चिमी जगत् के सारे देशो की राजधानियों मे हो चुका है, जिनकी तुलना यूरोप के महान् चित्रकार रोडिन और विलियम ब्लेक से की जाती है।

उनकी अंग्रेजी पुस्तको के नाम और प्रकाशन के वर्ष इस प्रकार है.—

दि मैडमेन	......	१६१८
ट्वेटी पिक्चर्स	......	१६१६
दि फोर रनर	......	१६२०
दि प्रोफ़ेट	......	१६२३
सैन्ड एएड फोम	......	१६२६
जीसस, दि सन आव मैन	......	१६२८
दि अर्थ गाड्स	...	१६३१
दि वान्डरर	......	१६३२
दि गार्डन आव दि प्रोफ़ेट	... ..	१६३३

वैसे तो उपरोक्त सभी पुस्तको का पूर्व एवं पश्चिम की कितनी ही भाषाओ मे अनुवाद हो चुका है लेकिन वास्तव मे दि प्राफेट (The prophet) तो कवि की सर्वोत्कृष्ट (मास्टर पीस) रचना गिनी जाती है और जिसका संसार की पच्चीस से भी अधिक भाषाओ में अनु-वाद हो चुका है।

इस महान् कवि दार्शनिक एवं चित्रकार का देहान्त ४८ वर्ष की अवस्था में अप्रैल १०, १६३१ ई० को हो गया। यदि वह कुछ दिन और जीवित रहता तो उसकी और भी कितनी महान् रचनाओं से संसार लाभान्वित होता।

परिचय

विख्यात आयरिश कवि अे अी. (जार्ज रसेल)ने खलील जिब्रान की तुलना हमारे रवीन्द्रनाथ ठाकुर से की है। जिस तरह श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कालिदास के बारे मे कवि गेटे के अेक सुभाषित का विस्तार करते हुअे तीन विश्वकवियों का सम्मेलन किया है अुसी तरह अे अी. ने भी अपने अुक्त अभिप्राय में वर्तमान काल के तीन सर्वोच्च चिंतकों का सम्मेलन किया है।

आयर्लैण्ड, आर्मिनिया और हिन्द, तीनों देशों मे अेक-सी धारा क्यों बहती है, यह कहना कठिन है। अे अी. का 'अिन्टरप्रेटर्स' खलील जिब्रान का 'दि प्रोफेट' और रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'गीतांजलि' विश्व-साहित्य मे अपना स्थान पा चुके हैं। रवीन्द्रनाथ ने प्रारंभ किया कविता से; किन्तु आगे बढ़ते-बढ़ते वे सर्वांग परिपूर्ण चिंतक और समाज-हितैषी हो गये हैं। अे अी. तो कवि भी थे, सामाजिक फिलसुफ भी थे और समाज-सेवक भी थे। खलील जिब्रान की आयु धारा बहुत नहीं बही। पूरे पचास वर्ष भी अुन्होंने अिस दुनिया में पूरे नहीं किये। तो भी अितने मे अुन्होंने आर्मिनिया और पूर्व अेशिया के नबीओं की परम्परा हृदयंगत कर ली थी। और अपनी काव्य-शक्ति से अुसे जीवित कर दिया

था। रवीन्द्रनाथ के साथ खलील जिब्रान का अुसी भी अेक साम्य है। साहित्यिक और चित्रकार भी बने यह दुर्मिल सुमेल दोनों ने सिद्ध किया है। अिसमें भी कुछ फर्क है। रवीन्द्रनाथ की चित्र-कला अुनकी विभूति के जैसी ही विविध और अकल है। खलील जिब्रान की चित्र-कला गूढ़ होते हुअे भी अेकरूप है।

अीश्वर ने भिन्न-भिन्न आकार में सौंदर्य की अभिव्यक्ति करते हुअे पहेलूदार रत्न और चमकते सितारे बनाये, प्रसन्न फूल और घाटदार पत्ते बनाये, रसपूर्ण और आकर्षक फल बनाये, आकाश में अुड़ते हुअे पक्षी और चंचल बादल भी बनाये। अिस तरह से अुसने सौंदर्य की अपार विविधता दिखाअी। अितनी साधना पूरी करने के बाद अपनी परिपक्व कला से विधाता ने मनुष्य-शरीर का निर्माण किया। जब मनुष्य-शरीर मे विकार-रहित, पाप-रहित प्रसन्नता प्रकट होती है तब मनुष्य-शरीर के सौंदर्य का अुत्कर्ष चरम कोटि तक पहुंच जाता है। खलील जिब्रान अिस मनुष्य-शरीर के सौंदर्य का, सौष्ठव का और लावण्य का अेकनिष्ठ पुजारी है। जहां पवित्रता है, प्राकृतिक प्रसन्नता है, वहां कपड़ों की जरूरत नहीं है। जानवर कपड़े नहीं पहनते हैं, अिसलिअे वे भद्दे नहीं दीख पड़ते है। पक्षी अपने प्राकृतिक शरीर को ढॅक देने की कोअी कोशिश नहीं करते है, अिसलिअे वे अश्लील नहीं दीख पड़ते है। फूलों के पास अुनका कोअी भी अंग गोपनीय नहीं होता है। अुनका परस्पर मिलन भी गुप्त न होकर किसी महोत्सव का रूप धारण करता है। मनुष्य के छोटे-छोटे बच्चे भी अपनी निर्व्याज

सरलवृत्ति से कमनीयता, प्रसन्नता और पवित्रता को अैसा कुछ रसायन बना देते हैं कि अुनकी प्राकृतिक अवस्था देखते ही हमारा हृदय कोमल, अुन्नत और संस्कार-संपन्न बन जाता है। मनुष्य के नग्न शरीर मे फूल-फूल की और पशु-पंखो की निर्व्याज मनोहरता और पवित्रता अर्पण करने की शक्ति खलील जिब्रान मे जैसी है वैसी रोडिन में है या नहीं, यह कहना कठिन है।

खलील जिब्रान बलिष्ठ कल्पना-शक्ति का कवि है। अेक से अधिक भाषा का शब्द-स्वामी है। गद्यकाव्य की अेक नयी शैली का निर्माता है। मनुष्य हृदय का कुशल परिचायक है।

अितना होते हुअे भी अुसका सच्चा परिचय तो ज्ञानी या सूफी शब्द से ही हम कर सकते हैं। प्राचीन काल के नबी जब कभी जीवन-रहस्य का अुपदेश करते थे तब वे लोक कथाओं का अुपजीवन करके दृष्टान्त और रूपक की ही भाषा में बोलते थे। खलील जिब्रान ने भी अपने 'मैडमेन'[1]—पागल—मे और 'वान्डरर'[1]—अतिथि—मे फूलों जैसे नाजुक और प्रेम-जैसे हृदय-वेधक दृष्टांत ही अिकट्ठे किये हैं। ज्ञानी और सूफी जब बोलते है तब बादाम-मिश्री के जैसे मिष्ट और पौष्टिक सुभाषित ही दुनिया के सामने धर देते हैं। खलील जिब्रान तो सुभाषितों का अप्रतिम रत्नाकर है। अुसके 'सेन्ड अेन्ड फोम' में अुसने सुभाषितों की रत्न-माला बनाअी है, अुसे पढ़ते ही रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'फायर फ्लाअिज़' की ही याद आती है।

१ इन दोनों का अनुवाद नवयुग-साहित्य-सदन, इन्दौर से 'पागल' और 'बटोही' के नाम से हो गया है।

निरंकुश कविता की ज्वालाअे अगर देखनी हों तो खलील जिब्रान का 'अर्थ गाड्स' पढ़ना चाहिअे। पढ़ते अैसा प्रतीत होता है कि कहाँ से ये सब, ये दृष्टियाँ और यह विरूप अभिरुचि कवि हृदय मे आ बसी हैं। देव और दानव, तूफान और संहार सबों का मानो ताण्डव-नृत्य विश्व के रगमंच पर चल रहा है और भगवान् स्वयं अुसका आस्वाद ले रहे है और कवि को अुसका ताल पकड़ने को प्रेरित कर रहे हैं।

सिर्फ अेक ही किताब में खलील ने ज़मीन पर अुतरना कबूल किया है। किन्तु अुसमे भी अुसकी प्रतिभा ने अपने ही ढंग का रास्ता निकाला है। अीसा मसीह की अपनी अेक निजी आवृत्ति तैयार करने का खलील का विचार हुआ होगा। अुसने अीसा के समकालीन अनेक लोगों को बुला-बुला कर अुनको अपना-अपना बयान देने को बाध्य किया है। हमारे मैथिलीशरण ने जिस तरह अपने 'द्वापर' में भिन्न-भिन्न लोगों से अपने हृदय के भाव व्यक्त करवाये हैं अुसी तरह जिब्रान ने भी पायलेट की स्त्री, पर्शिया का फिलसुफ, सामान्या मेग्डेलिन आदि अनेकों के मुँह से अीसा के बारे मे अपनी-अपनी क्या राय थी, अपना-अपना क्या अभिप्राय था, सब कुछ बुलवाया है।

प्रस्तुत 'दि प्रोफेट'—नबी की अलविदा—अथवा 'जीवन-सन्देश'-मे खलील जिब्रान ने अपना विचार-सर्वस्व डाल दिया है। और अुसमे जो कुछ बाकी रहा था और व्यक्त किये बिना खलील से रहा नहीं जाता था वह अुसने परिशिष्ट के रूप मे अपने 'गुरु का बाग' मे—दि गार्डन आव दि

प्रोफेट' मे—भर दिया है। तब ही जाकर वह कहाँ- बादल के जैसा पतला विरल होकर विश्वाकाश में विलीन होगया।

लोगों को यह किताब (जीवन-संदेश) जितनी अच्छी लगती है अुतनी 'गुरु का बाग' अच्छी नहीं लगती। और अिसमें आश्चर्य भी नहीं है। 'जीवन-संदेश' मे जीवन-स्मृति है, जब कि 'गुरु का बाग' मे जीवन-रहस्य और जीवन-काव्य भी ठसाठस भरा है। अुसके लिअे दिल और दिमाग की पाचन-शक्ति कुछ और किस्म की चाहिअे।

'जीवन-संदेश' मे कवि ने अेक नाम-मात्र कथा का निर्माण अुसके धागे पर जीवन के भिन्न-भिन्न पहलू पर प्रकाश डालने वाले अपने विचार और जीवन-सिद्धांत पिरो दिये है। ये हैं अुसके विषय—प्रेम, लग्न, बाल-बच्चे, आदान-प्रदान, खान-पान, मेहनत-मजदूरी, सुख-दुख, क्रय-विक्रय, गुनाह और सजा, कपड़े और मकान, विवेक और वासना, कानून और आजादी, शिक्षा और आत्म-परिचय, शुभ और अशुभ, ज्ञान और अज्ञान, उपभोग और सौंदर्य, जीवन और मृत्यु, धर्म और भविष्य।

स्पष्ट है कि कवि को अेक नया हृदय-धर्म चलाना है। अुसकी अपनी अेक दृष्टि निश्चित हो चुकी है। अुसीका विनियोग जीवन के अंग-प्रत्यग मे कराके अेक नवीन मानवता वह तैयार कर रहा है। अिस किताब का आकर्षण मुख्यतया वही है। पूरा ग्रंथ पढ़ने के बाद मनुष्य के मन मे संतोष होता है कि सचमुच हमे अेक दिव्य-दृष्टि मिली है।

अिससे अधिक अिस ग्रंथ का परिचय देना अुसको यहाँ दोहराना है। अितने थोड़े मे, अितनी विशद शैली में

जीवन का विधान और भविष्य के लिये नव-निर्माण शायद ही किसी अन्य ग्रंथ मे किया होगा।

राष्ट्रीय सप्ताह, वर्धा
अप्रैल १६४०

—काका कालेलकर

अनुक्रम

जीवन-संदेश

: १ :

महाप्रस्थान

अल्मुस्तफा[1] उसका नाम था।

प्रभु ने उसे अपनाया और स्नेह-भाजन बनाया था।

वह अपने समय में प्रकाश का अग्रदूत था।

बारह वर्ष तक उसने आरफ़ालीज़[2] नगर में उस जहाज़ की प्रतीक्षा की थी, जो उसे वापस जन्म-भूमि[3] को ले जाने वाला था।

बारहवे वर्ष ईलूल[4] महीने की सातवीं तारीख को, जब कि फ़सलें काटने के दिन थे, वह शहर के बाहर की टेकरी पर चढ़ा और उसने समुद्र की ओर निगाह डाली।

वहाँ उसे अपना जहाज़[5] कोहरे के साथ आता नज़र आया।

उसके हृदय के द्वार खुल पड़े और उसका आनंद पंख फड़फड़ाकर समुद्र में दूर तक फैल गया।[6]

---

१. अरबी भाषा का एक आदर-वाचक शब्द। २. मृत्यु-लोक। ३. परलोक। ४. सीरिया देश में प्रचलित संवत् का एक महीना। ५. मृत्यु का समय। ६. ज्ञानी को मृत्यु भय का नहीं आनंद का कारण है।

फिर उसने आँखे मूँद लीं और अन्तरात्मा की अनंत शांति में डूबकर ईश्वर की आराधना की।

पर जैसे ही वह टेकरी से उतरने लगा, उस पर उदासी के बादल छा गए। वह सोचने लगा—

कैसे मैं यहाँ से पूरी शान्ति से, बिना जरा भी वेदना अनुभव किये, जा सकूँगा? नहीं, मैं अपनी भावनाओं पर घाव सहे बिना, इस शहर को नहीं छोड़ सकूँगा।

दर्द-भरे लम्बे-लम्बे[1] दिन और सूनेपन से भरी हुई रातें, इस शहर की दीवारों के भीतर, मैंने बिताई हैं। कौन अपने दर्द और सूनेपन से, बिना व्यथित हुए, विदा ले सकता है?

इन गलियों में मैंने भावनाओं के अनन्त कण बिखराए हैं। मेरी लालसाओं के असंख्य बालक इन टेकरियों पर नंगे घूम रहे हैं। इनकी स्मृति का भार और दर्द साथ मे ले जाए बिना मैं यहाँ से विदा नहीं ले सकूँगा।

यह कोई पहनने का कपड़ा तो है नहीं, जिसे मैं उतार कर फेंके जा रहा हूँ; यह तो मेरी अपनी देह का चमड़ा है जिसे अपने ही हाथों उतार रहा हूँ।

आज जिसे पीछे छोड़े जा रहा हूँ, वह केवल एक कल्पना ही नहीं है, बल्कि एक ऐसा हृदय है जिसे भूख और प्यास ने मधुर बनाया है।

फिर भी अब मैं विलम्ब नहीं कर सकता।

समुद्र[2]—जो सभी को अपनी ओर बुलाता है— मुझे

---

१. प्रभु वियोग के कारण। २. काल

भी बुला रहा है। अब मुझे भी प्रस्थान करना ही पड़ेगा।

जब काल के पंख रात की ज्वाला से जल रहे हैं, तब भी ठहरे रहना तो बर्फ बन जाना, पत्थर हो जाना और निर्जीवता के बन्धन में बँध जाना है।[1]

जी तो करता है कि यहाँ का सब-कुछ अपने साथ ले जाऊं। लेकिन यह कैसे हो सकता है?

शब्द, जो जिह्वा और ओठों से पंख पाता है, उन्हें भी अपने पंखों पर उड़ाकर नहीं ले जा सकता। उसे तो अकेले ही आकाश के छोर नापने पड़ते हैं।

अपने घोंसले को यहीं छोड़कर गरुड़ को बिलकुल अकेला ही सूर्य की ओर उड़ना पड़ता है।

टेकरी की तलहटी मे पहुँचते ही उसने समुद्र की ओर मुँह फेरा और देखा कि उसका जहाज़ बंदर के निकट पहुँच रहा है, जिसके अगले भाग पर मल्लाह--उसके वतन के लोग—बैठे हुए थे।

उसकी आत्मा से उनके लिए पुकार उठी—मेरी सनातन माँ की सन्तानो! ओ समुद्र की तरंगों और तूफ़ान पर सवारी करने वालो!!

न जाने कितनी वार तुमने मेरे स्वप्नों में जहाज़ चलाए हैं। और अब तुम मेरी जागृति में आए हो, जो मेरा और भी गहरा सपना है।

---

१. समय आने पर प्राणी का मृत्यु से छुटकारा पाने का प्रयत्न चारों ओर बरफ़ के बीच आग जलाकर जीवन-रक्षा करने के प्रयत्न-सा है।

चलने के लिए मैं तैयार खड़ा हूँ। और मेरी उत्कंठा के मुक्त पाल पवन की प्रतीक्षा में हैं।

केवल एक श्वास इस स्थिर वायु में और लूँगा, केवल एक चाह-भरी निगाह पीछे और डालूँगा।

उसके बाद मैं खड़ा हूँगा तुम्हारे बीच—तुम समुद्र के यात्रियों मे समुद्र का यात्री बनकर।

ओ विराट समुद्र, निद्रा-लीन माँ, जो नदियों और निर्झरों के लिए एकमात्र शान्ति और मुक्ति है! यह झरना एक बार और मोड़ खायगा, इस वन-वीथिका में एक और कल-रव करेगा—और तब मैं तुम्हारे पास आ पहुँचूँगा—

एक असीम बिन्दु सीमा-हीन सिन्धु की गोद में।[1]

जैसे ही वह मुड़ा, उसने देखा कि दूर-दूर से दल-के-दल स्त्री-पुरुष अपने खेत, खलिहान और द्राक्ष-कुंजों को छोड़-छोड़कर नगर-द्वार की ओर जल्दी-जल्दी बढ़े आ रहे हैं।

उसने सुना कि वे उसका नाम ले रहे हैं। खेत-खेत, पुकार-पुकार कर एक-दूसरे से उसके जहाज़ के आने की बात कर रहे हैं।

तब उसने अपने-आप से कहा :

क्या यह विदा-वेला जमघट लगने का अवसर बनेगी?

और क्या यह कहा जायेगा कि मेरी सन्ध्या ही वास्तव में मेरी उषा थी?

---

१. जीव चैतन्य का बिन्दु है। ईश्वर समुद्र है। दोनो ही चैतन्य रूप हैं, इसलिए दोनों अनन्त हैं।
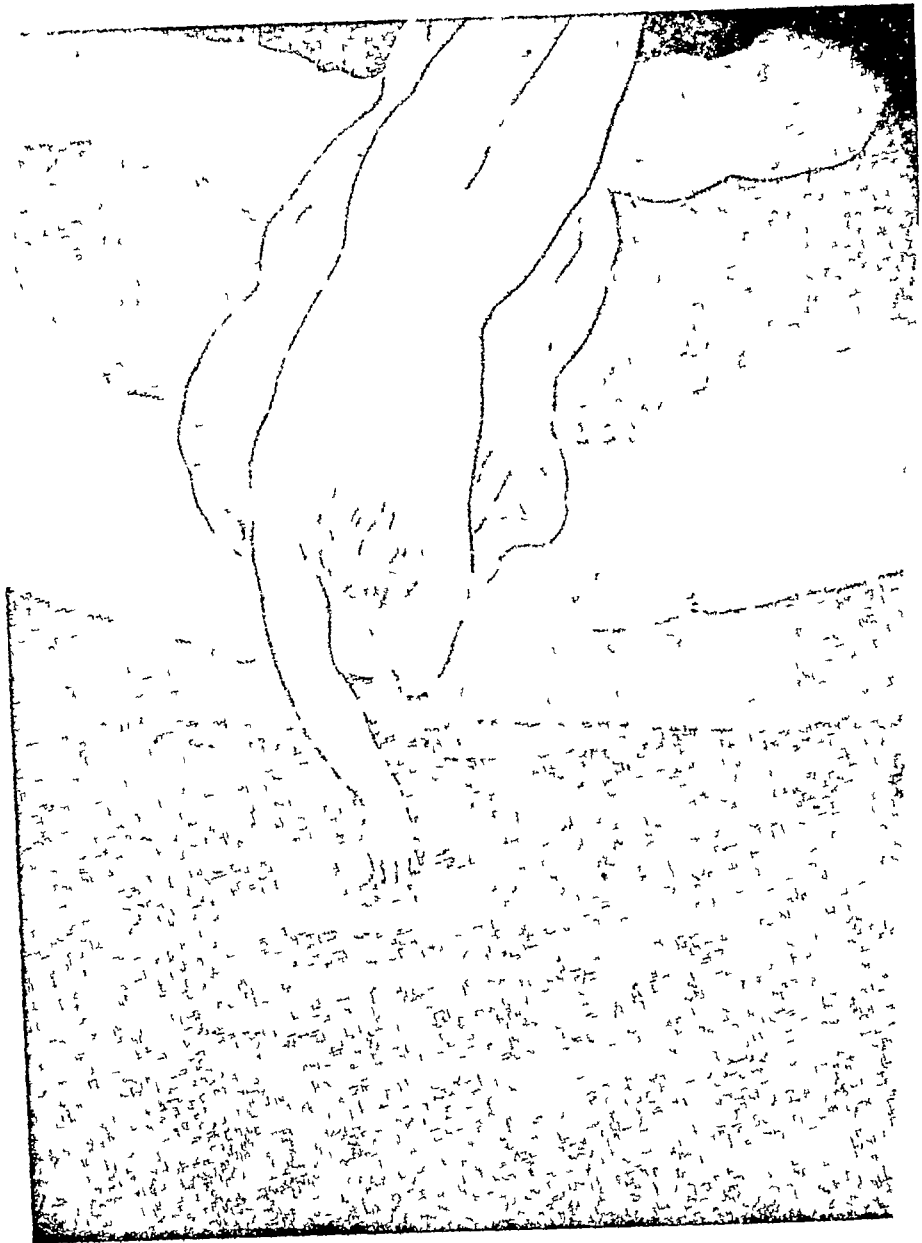
उन्हे मैं क्या भेट दूँ, जो हलों को भूमि में अधगड़े ही छोड़कर, अथवा अंगूर का रस निकालने वाले कोल्हुओं को अधबीच में पटककर मुझसे मिलने दौड़ पड़े है ?

क्या मेरा हृदय फलों के भार से झुका हुआ वृक्ष बनेगा, जिसके फल तोड़-तोड़ कर मैं उनमें बाँट सकूँ ?

क्या मेरी अभिलाषाएँ जल-स्रोत की तरह फूट कर बह पड़ेंगी, ताकि मैं उनके प्याले भर सकूँ ?

क्या मै वह वीणा हूँ जिसे सर्वशक्तिमान् का स्पर्श मिल सके, या वह बाँसुरी हूँ जिसमे से उसकी साँस गुज़र सके ?

मैं तो केवल मौन का साधक रहा हूँ; और उस मौन में मुझे ऐसा क्या ख़ज़ाना मिला है जो मैं विश्वास के साथ लुटा सकूँ ?

यदि यह मेरा फसल काटने का समय है तो कोई बताए कि किन खेतों में बीज बोए थे—किन भूली हुई ऋतुओं में बोए थे ?

वास्तव में यदि मेरे दीपक को ऊँचा उठाने का समय आ पहुँचा है, तो निश्चय ही मुझमें वह ज्योति नहीं है जो इसमे जलेगी।

अपना रीता और अनजला दीया ही मैं ऊपर उठाऊँगा। निशानाथ स्वयं ही इसे स्नेह से भरेंगे। वही इसे चेताएँगे।[1]

इतने विचारों को तो उसने वाणी दी लेकिन बहुत-कुछ उसके हृदय के अव्यक्त ही रह गया, क्योंकि वह स्वयं ही

---

१. अब मुझे क्या कहना है, इसका मुझे ज्ञान नहीं। वह स्वयं मेरी वाणी बनेगा।

अंतरतर के गुह्यतर रहस्य को शब्द प्रदान करने में असमर्थ था।

जैसे ही उसने नगर में प्रवेश किया, सभी नगर-निवासी उससे मिलने के लिए आए। सब एक स्वर से उसे पुकार रहे थे।

पहले नगर के बड़े-बूढ़े सामने आकर बोले :

तुम अभी हमें छोड़कर न जाओ।

तुम हमारी सन्ध्या के धुँधले प्रकाश में दोपहर का ज्वार बनकर रहे हो और तुम्हारी जवानी ने हमें स्वप्न देखने के सपने दिये हैं।[1]

तुम हमारे बीच कोई अजनवी अथवा अतिथि नहीं हो, बल्कि हमारे लाड़ले पुत्र हो।

अभी से हमारी आँखों को अपने दर्शन की प्यास से मत तड़पाओ।

इसके बाद साधु-साध्वियों ने उससे कहा :

अभी समुद्र की तरंगों को हममें बिछोह न डालने दो और तुमने हमारे बीच जो घड़ियाँ बिताई हैं, उन्हें केवल स्मृति का विषय न बना जाओ।

तुम हमारे बीच स्फूर्ति बनकर घूमे हो और तुम्हारी छाया हमारे मुखों पर प्रभा बनकर रही है।

---

१. सन्ध्या—अज्ञान की। दोपहर—ज्ञान की। जवानी—उत्साह, ज्ञान। स्वप्न—उच्च अभिलाषाएँ। हम अज्ञान और निराशा से घिरे हुए थे। आपने ज्ञान और आशा से परिपूर्ण किया था।

हमने तुमसे अत्यधिक प्रेम किया है, किन्तु वह प्रेम नीरव था और उसे परदों से ढक रखा था।

लेकिन आज वह तुम्हारे सामने चीख पड़ा है और तुम्हारे सामने बे-पर्द खड़ा है।

कारण, यह सनातन सत्य है कि प्रेम अपनी गहराई को वियोग की घड़ी आ पहुँचने के पहले तक स्वयं नहीं जानता।

और लोग भी आए और उन्होंने भी उसकी मनुहार की, किन्तु उसने कुछ उत्तर नहीं दिया, केवल अपना सिर झुका लिया।

जो समीप खड़े थे उन्होंने उसकी छाती पर टपकते हुए आँसू देखे।

इसके बाद वह तथा अन्य सभी लोग मन्दिर के सामने वाले चौक की तरफ बढ़े।

तब उस मन्दिर में से एक स्त्री बाहर आई। उसका नाम था अल्मित्रा। वह ब्रह्मवादिनी थी।

उसने उसकी ओर बड़ी कोमल दृष्टि से देखा, क्योंकि जब उसे उनके नगर में आए केवल एक ही दिन हुआ था, तब पहले-पहल इसी महिला ने उसे समझा और उसमें विश्वास किया था।

उसने यह कहते हुए उसका अभिनन्दन किया :

ओ प्रभु के पैग़म्बर! अनन्त के साधक! चिरकाल से

तुम अपने जहाज के लिए दूर-दूर तक खोज करते रहे हो।

अब तुम्हारा जहाज आ पहुँचा है, और अब तुम्हारा जाना जरूरी हो गया है।

तुम्हारे स्मृतियों के देश और तुम्हारी महत्तर अभिलाषाओं के आश्रय-स्थान के लिए तुम्हारी चाह बहुत गहरी है। हमारा प्रेम तुम्हारा बन्धन नहीं बनेगा, न हमारी आवश्यकताएँ तुम्हें पकड़ रखेंगी।

फिर भी हम तुमसे प्रार्थना करते हैं कि हमको छोड़कर जाने के पहले तुम हमें अपने अमृत-वचन सुनाओ, और अपने सत्य के भण्डार में से कुछ हमें प्रदान करो।

वह सत्य हम अपनी संतानों को देंगे, और वे अपनी संतानों को। और वह अमर रहेगा।

अपने एकान्त में तुमने हमारे दिनों का निरीक्षण किया है, और अपनी जागृति मे हमारी निद्रा का रुदन और हास्य सुना है।[१]

अतएव अब तुम हमें हमारा ही परिचय दो। जीवन और मरण के बीच जो कुछ है,उसके विषय में तुमने जो जान पाया है, वह हमें भी बताओ।

उसने उत्तर दिया :

हे आरफालीज-वासियो, मै तुम्हे क्या कह सकता हूँ, सिवा उन बातों के, जो इस समय भी तुम्हारे प्राणों मे मचल रही हैं ?

---

१. हमारी अज्ञान-अवस्था मे हमें जो हर्ष-शोक हुए हैं।

: २ :

प्रेम

तब अल्मित्रा ने कहा :

हमसे प्रेम के विषय मे कुछ कहो।

तब उसने अपना मस्तक ऊँचा किया और लोगों पर दृष्टि डाली। सब पर शान्ति छा गई और गुरु-गम्भीर स्वर से उसने कहा :

जब प्रेम तुम्हे अपनी ओर बुलाए तो उसका अनुगमन करो, यद्यपि उसकी राहे विकट और विषम हैं।

जब उसके पंख तुम्हे ढक लेना चाहे, तो तुम आत्म-समर्पण कर दो,

भले ही उन पंखों के नीचे छिपी तलवार तुम्हे घायल करे।

और जब वह तुमसे बोले तो उसमें विश्वास रक्खो,

भले ही उसकी आवाज़ तुम्हारे स्वप्नों को चकनाचूर कर डाले, जिस तरह झंझावात उपवन को उजाड़ डालता है।

क्योंकि प्रेम जिस तरह तुम्हे मुकुट पहनायेगा उसीतरह शूलीपर भी चढ़ाएगा। जिस तरह वह तुम्हारे विकास के लिए

है, उसी तरह तुम्हारी काट-छाँट के लिए भी।

जिस प्रकार वह तुम्हारी ऊँचाइयों तक चढ़कर सूर्य की किरणों में काँपती हुई तुम्हारी कोमलतम कोंपलों की भी देख-भाल करता है,

उसी प्रकार वह तुम्हारी नीचाइयों तक उतर कर, भूमि में दूर तक गड़ी हुई, तुम्हारी जड़ों को भी झकझोर डालता है।

अनाज की बालों[1] की तरह वह तुम्हे अपने अन्दर भर लेता है।

तुम्हे नंगा करने के लिए कूटता है।

तुम्हारी भूसी दूर करने के लिए तुम्हें फटकता है।

तुम्हे पीसकर श्वेत बनाता है।

तुम्हे नरम बनाने तक गूँधता है;

और तब तुम्हें अपनी पवित्र अग्नि पर सेकता है जिससे तुम प्रभु के पावन थाल की पवित्र रोटी बन सको।

प्रेम तुम्हारे साथ यह सारी लीला इसलिए करता है कि तुम अपने अंतरतम के रहस्यों का ज्ञान पा सको, और उसी ज्ञान द्वारा जगज्जीवन के हृदय का एक अंश बन सको।

लेकिन यदि भयवश तुम केवल प्रेम की शान्ति और प्रेम के उल्लास की ही कामना करते हो,

तो,तुम्हारे लिए यही भला है कि तुम अपनी नग्नता को ढक लो और प्रेम की कूटनेवाली खलिहान से बाहर हो जाओ।

---

१. जिस तरह गेहूँ की बालों में गेहूँ के दाने, मक्का के भुट्टे में मक्का के दाने भरे रहते हैं।

और ऋतु-हीन[1] संसार में जा बसो, जहाँ तुम हँसोगे तो, लेकिन पूरी हँसी नही, जहाँ तुम रोओगे तो, लेकिन सारे आँसुओं के साथ नहीं।

प्रेम किसी को अपने-आपके सिवा न कुछ देता है, न किसी से अपने-आपके सिवा कुछ लेता है।

प्रेम न किसी का स्वामी बनता है, न किसी को अपना स्वामी बनाता है।

क्योंकि प्रेम प्रेम में ही परिपूर्ण है।

जब तुम प्रेम करो तब यह न कहो—'ईश्वर मेरे हृदय में है।' बल्कि कहो—'मैं ईश्वर के हृदय मे हूँ।'

और कभी न सोचना कि तुम प्रेम का पथ निर्धारित कर सकते हो, क्योंकि प्रेम यदि तुम्हें अधिकारी समझता है तो स्वयं तुम्हारी राह निर्धारित करता है।

प्रेम अपने-आपको सम्पूर्ण करने के सिवा और कुछ नही चाहता।

यदि तुम प्रेम करो और तुम्हारे हृदय मे कामनाएँ उठे ही तो वे ये हों :

मैं द्रवित हो सकूँ—बहते हुए झरने की तरह रजनी को सुमधुर गीत से भर सकूँ।

अत्यन्त कोमलता की वेदना मैं अनुभव कर सकूँ।

अपने प्रेम की अनुभूति से मैं घायल हो सकूँ।

---

1. परिवर्तन-हीन, जीवन-हीन

अपनी इच्छा से और हँसते-हँसते मैं अपना रक्त-दान कर सकूँ।

पंख फैलाता हुआ हृदय लेकर प्रभात-वेला में जाग सकूँ और एक और प्रेममय दिन पाने के लिए धन्यवाद कर सकूँ।

दोपहर को विश्राम कर सकूँ और प्रेम के परम आनन्द में तल्लीन हो सकूँ।

दिन ढलने पर कृतज्ञता-भरा हृदय लेकर घर लौट सकूँ;

और फिर रात्रि में हृदय में प्रियतम के लिए प्रार्थना और ओठों पर उसकी प्रशंसा का गीत लेकर सो सकूँ।

: ३ :

विवाह

और इसके बाद अलमित्रा ने फिर सविनय पूछा :

और विवाह के विषय में, महात्मन् ?

उसने उत्तर दिया :

तुम दोनों[1] एक साथ जन्मे थे और सदा साथ-साथ ही रहोगे।

जिस समम मृत्यु के श्वेत पंख तुम्हारे जीवन की घड़ियों को बिखेर देंगे, उस समय भी तुम साथ-साथ ही होगे।

सत्य ही, प्रभु की प्रशान्त स्मृति में भी तुम दोनों का स्थान एक साथ ही होगा।

फिर भी अपनी अनन्यता में कुछ अवकाश भी रहने दो,

और तुम दोनों के बीच स्वर्ग के समीरण को नृत्य करने दो।

एक-दूसरे से प्रेम करो, लेकिन प्रेम को बन्धन न बनने दो;

बल्कि उसे अपनी आत्माओं के किनारों के बीच तरंगित समुद्र बनने दो।

एक-दूसरे का प्याला भरो, लेकिन एक ही प्याले से मत पियो।

---

१. दम्पति।

एक-दूसरे को अपने भोजन में से भाग दो, लेकिन एक ही रोटी में से दोनों मत खाओ।

साथ-साथ गाओ, नाचो, हर्षोन्मत्त होओ, फिर भी एक-दूसरे को एकान्त पाने दो ;

जिस तरह वीणा के तार एक ही राग में कम्पित होते हुए भी अलग-अलग हैं।

हृदयों को अर्पित करो, लेकिन एक-दूसरे के संरक्षण में मत रखो।

क्योंकि, केवल जीवन की मुट्ठी में ही तुम्हारे हृदय समा सकते हैं।

और तुम साथ-साथ खड़े होओ, लेकिन एक-दूसरे के बहुत ही निकट नहीं।

क्योंकि मन्दिर के स्तम्भ अलग-अलग खड़े हैं।

और बलूत तथा सरों एक-दूसरे की छाया में नहीं बढ़ते।

: ४ :

बालक

इसके बाद एक युवती, जो एक नन्हे बालक को छाती से लगाए थी, बोली :

हमसे बालकों के विषय में कुछ कहो।

और उसने कहा :

तुम्हारे बालक तुम्हारे अपने बालक नही है।

वे जीवन की—जन्म लेने की—लालसा की संताने है।

वे तुम्हारे द्वारा आते है, लेकिन तुममें से नहीं,

और यद्यपि वे तुम्हारे साथ हैं, फिर भी वे तुम्हारे नही हैं।

तुम इन्हे अपना प्रेम भले ही दो, लेकिन अपने विचार मत दो,

क्योंकि उनके अपने विचार है।

तुम उनके शरीरो को भले ही घर में रखो, लेकिन उनकी आत्माओं को नही,

क्योंकि उनकी आत्माएँ भावी के भवन में रहती हैं, जहाँ तुम नही पहुँच सकते—स्वप्न मे भी नहीं।

तुम उनके सदृश होने का प्रयत्न भले ही करना, लेकिन उन्हें अपने अनुरूप बनाने की चेष्टा न करना।

क्योंकि जीवन पीछे की ओर नहीं जाता, और न बीते हुए कल के साथ रुकता है।

तुम वे धनुष हो, जिससे तुम्हारे बालक रूपी जीवित बाण छोड़ जाते हैं।

वह धनुर्धर अनन्त के पथ पर निशाना ताकता है, और तुम्हें अपनी महत् शक्ति से झुकाता है कि उसके तीर द्रुत-गति से दूर तक जा सकें।

उस धनुर्धर के हाथों तुम्हारा यह झुकाया जाना आनन्द के लिए हो।

क्योंकि जिस प्रकार वह उड़कर जाने वाले बाण को प्यार करता है, उसी प्रकार वह उस धनुष को भी, जो स्थिर है।

: ५ :

दान

तब एक धनवान व्यक्ति ने कहा

हमसे दान के सम्बन्ध मे कुछ कहो।

और उसने उत्तर दिया :

जब तुम अपनी सम्पत्ति में से कुछ देते हो, तो देते हो सही, लेकिन 'नहीं' के बराबर।

जब तुम अपने-आप में से देते हो, तब वास्तव मे दान करते हो।

कारण, यह सम्पत्ति है क्या ? केवल कुछ चीजे जिन्हें तुम, इस भय से कि इनकी कल[1] तुम्हे जरूरत पड़ सकती है, संचित करते हो और जिनकी रखवाली करते हो।

और कल ? कल उस अति सयाने कुत्ते को क्या देगा जो चिन्ह-रहित रेत में स्थान-स्थान पर हड्डियाँ गाड़ता तीर्थ-यात्रियों के दल का अनुगमन करता है।

और अभाव का भय क्या है, स्वयं अभाव ही तो।

जब तुम्हारा कुँआ भरपूर है, तब भी तुम्हें प्यास का डर क्या स्वयं ऐसी प्यास[2] नहीं है जिसका बुझना असम्भव है ?

---

१. भविष्य में। २. तृष्णा।

कई ऐसे लोग भी है जो अपने विपुल संग्रह में से थोड़ा-सा दान देते हैं, और इसलिए देते हैं कि उनका नाम हो। और यह गुप्त वासना उनके दान को अशिव बना देती है।

और ऐसे लोग भी हैं जिनके पास थोड़ा ही है, लेकिन वे सब-कुछ दे डालते हैं।

ये ही लोग है जो जीवन में विश्वास करते हैं और जीवन की उदारता में भी, और इनके खज़ाने कभी ख़ाली नहीं होते।

ऐसे भी लोग हैं जो उल्लास पूर्वक देते हैं, और उल्लास ही उनके लिए पुरस्कार है।

और ऐसे भी लोग है जो कष्ट पूर्वक देते है, और यह कष्ट ही उनके लिए दीक्षा[1] है।

और ऐसे भी लोग है जो देते है, लेकिन देने में कष्ट अनुभव नही करते, न वे उल्लास की अभिलाषा करते हैं, और न पुण्य समझकर ही कुछ देते हैं।

वे देते हैं, जिस प्रकार विजन का फूल दशों दिशाओं मे अपना सौरभ लुटा देता है।

इन्हीं लोगों के हाथों द्वारा ईश्वर बोलता है और इन्हीं की आँखों में से वह पृथ्वी पर अपनी मुस्कान छिटकाता है।

माँगने पर देना अच्छा है, लेकिन, आवश्यकता अनुभव करके, बिना माँगे देना और भी अच्छा है।

मुक्त-हस्त व्यक्ति के लिए दान देने की अपेक्षा दान लेने वाले की तलाश में अधिक आनन्द है।

---

१. उन्हें शिक्षा देता है।

और तुम्हारे पास ऐसा है ही क्या जिसे तुम रखे रह सकते हो ?

जो कुछ तुम्हारे पास है, सब एक दिन दिया ही जायगा।

इसलिए अभी दे डालो, ताकि दान देने का मुहूर्त्त तुम्हारे वारिसों को नहीं, तुम्हें ही प्राप्त हो जाय।

तुम प्रायः कहते हो, "मैं दान दूँगा, किन्तु सुपात्र को ही।"

तुम्हारी वाटिका के वृक्ष ऐसा नहीं कहते, न तुम्हारे चरागाह की भेड़ें।

वे देते हैं, ताकि जी सकें, क्योंकि रखे रहना ही मृत्यु है।

अवश्य ही, जो दिवस और रात्रियों का दान पाने का अधिकारी है, वह तुमसे शेष सभी कुछ पाने का अधिकारी है।

उससे बड़ा रेगिस्तान[1] और क्या होगा जो दान लेने के साहस, विश्वास, नहीं—औदार्य में है।

और तुम हो ही कौन कि मानव तुम्हारे सामने अपनी छाती खोले ? और स्वाभिमान को बे-पर्द करे, ताकि तुम पात्रता को नग्न और आत्म-गौरव को निर्लज्ज स्थिति में देख सको।

पहले यह देखो कि तुम स्वयं दाता बनने या दान देने का साधन बनने के योग्य हो भी।

कारण, वस्तुतः जीवन ही जीवन को देता है, और तुम जो अपने-आपको दाता मान बैठते हो, केवल एक गवाह हो।

---

१. जिसने माँगने का साहस किया है वह निश्चय ही अभाव-ग्रस्त है।

और तुम लेने वालो—और तुम सभी लेने वाले हो[1]—अपने ऊपर कृतज्ञता का बोझ न लो, अन्यथा तुम अपने ऊपर जुआ लादोगे और अपने दाता पर भी;

बल्कि दाता-सहित तुम भी उसके उपहारों पर ऊपर उठो, मानो पंखों पर उड़ रहे हो।

क्योंकि अपने ऋण का आवश्यकता से अधिक ध्यान रखना उसकी दान-शीलता पर संदेह करना है, जिसे पृथ्वी जैसी उदार माता और ईश्वर जैसा महान् पिता उपलब्ध है।

---

१. वास्तव में ससार का प्रत्येक प्राणी प्रभु के आगे भिखारी के रूप में है।

: ६ :

खान-पान

इसके बाद एक बूढ़ा सराय वाला बोला :

हमसे खाने-पीने के विषय में भी कुछ कहो।

तब वह बोला :

काश तुम पृथ्वी की सुवास पर निर्भर और अमर-बेल[1] की भाँति केवल किरणों पर जीवित रह सकते।

लेकिन क्योंकि पेट भरने के लिए तुम्हें हिंसा करना और प्यास बुझाने के लिए नवजात बछड़े से उसकी माँ का दूध लूटना ही पड़ता है, तो यह कार्य प्रभु की पूजा के रूप में करो।

और अपने भोजन के थाल को बलिवेदी समझो जिस पर जंगल और मैदान के शुद्ध और निर्मल जीवन की उसके लिए बलि दो जो मानव में विशेष शुद्ध और विशेष निर्मल है।

किसी जीव को हलाल करते समय उससे अपने मन में कहो :

"जो शक्ति तुम्हारा वध कर रही है, उसी ने मुझे भी मार रखा है, और मुझे भी खाया जायगा।

---

१. अमरबेल एक लता है, जो वृक्षों पर छत की तरह छाई रहती है। भूमि में उसकी जड़ नहीं होती, फिर भी वह हरी रहती है।

"क्योंकि जिस कानून ने तुम्हें मेरे हाथों में सौंपा है, वही मुझे भी और अधिक शक्तिशाली हाथों में सौंपेगा।

"तुम्हारा रक्त और मेरा रक्त उस रस के अतिरिक्त और कुछ नहीं है जो विश्व-वृक्ष का पोषण करता है।"

और जब दाँतों से किसी सेब को चबाओ तो उससे अपने मन में कहो :

"तुम्हारे बीज मेरे शरीर में जियेंगे।

"और तुम्हारे कल की कलियाँ मेरे हृदय में खिलेंगी।

"और तुम्हारी सुगन्धि मेरा श्वास होगी।

"और हम दोनों मिलकर सब ऋतुओं में आनन्द लूटेंगे।"

और फसल के समय जब तुम द्राक्ष-कुंज के अंगूरों को कोल्हू में डालने के लिए जमा करो तो अपने हृदय में कहो :

"मैं भी एक द्राक्ष-कुंज हूँ और मेरे फल कोल्हू में पेरे जाने के लिए जमा किये जायँगे।

"और नई मदिरा के समान मुझे अविनाशी घरों में बन्द रखा जायगा।"

और शीत-काल में जब तुम शराब खींचो, तब शराब के प्रत्येक प्याले के लिए तुम्हारे हृदय में गीत स्फुरित हो।

और उस गीत मे, फसल के दिन, द्राक्ष-कुंज और द्राक्ष-कोल्हू की स्मृति हो।

: ७ :

श्रम

तब एक हलवाहा बोला :

हमसे श्रम के सम्बन्ध में कुछ कहो।

इसके उत्तर में उसने कहा :

श्रम करो, ताकि तुम जगत और जगदात्मा की गति के साथ रह सको।

क्योंकि आलसी होना, ऋतुओं से अनजान रहना, जीवन के उस जुलूस से बाहर हो जाना है जो सगौरव और सगर्व-समर्पण सहित अनन्त की ओर प्रयाण कर रहा है।

जब तुम श्रम करते हो, तब तुम एक वंशी होते हो, जिसके अन्तर से गुजरकर क्षणों की काना-फूँसी संगीत बन जाती है।

और जब शेष जगत एक स्वर में गा रहा है, तब तुममें से कौन होगा जो मूक और न बजने वाला यंत्र बनना चाहेगा।

तुम्हें सदा यही बताया गया है कि श्रम अभिशाप है, और मजदूरी दुर्भाग्य।

लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि जिस समय तुम श्रम करते हो उस समय तुम पृथ्वी के सुदूर के उस स्वप्न के एक अंश को पूर्ण करते हो, जो अपने जन्म के दिन तुम्हारे हवाले कर दिया गया था।

मेहनत करते रहकर तुम वास्तव में जीवन से प्रेम करते हो।

और श्रम द्वारा जीवन से प्रेम करना जीवन के रहस्यों से घनिष्ठता करना है।

किन्तु यदि तुम वेदना के आवेग में जन्म-धारण को एक संकट और जीवन को जीवित रखना ललाट पर लिखा अभिशाप मानते हो, तो मेरा भी कहना है कि केवल तुम्हारे ललाट का पसीना ही तुम्हारे ललाट के अक्षरों को धो सकेगा।[1]

तुम्हे यह भी कहा गया है कि जीवन अन्धकार है और, अपनी थकान मे थके हुए लोगों का यह कथन, तुम भी प्रतिध्वनित करते हो।

और मै भी कहता हूँ, जीवन वास्तव मे अंधकार है, सिवा उन घड़ियों के जिनमें प्रेरणा का अस्तित्व है;

और सम्पूर्ण प्रेरणा अन्धी है, सिवा उन घड़ियों के जिनमें ज्ञान का अस्तित्व है;

और सम्पूर्ण ज्ञान मिथ्या है, सिवा उन घड़ियों के जिनमें श्रम का अस्तित्व है;

और सम्पूर्ण श्रम निस्सार है, सिवा उन घड़ियों के

---

१. श्रम के द्वारा ही तुम अपना भाग्य बदल सकते हो।

जिनमे प्रेम का अस्तित्व है;

और जब तुम प्रेम-पूर्वक श्रम करते हो तब तुम अपने-आप से, एक-दूसरे से और ईश्वर से संयोग की गाँठ से बाँधते हो।

और प्रेम-पूर्वक श्रम करना है क्या ?

यह है, तुम्हारे हृदय की रुई से काते हुए सूत से वस्त्र बुनना, मानो स्वयं तुम्हारे प्रियतम को ही इसे पहनना है,

यह है, अनुराग सहित एक घर का निर्माण करना, मानो स्वयं तुम्हारे प्रियतम को ही निवास करना है;

यह है, तुम्हारा सम्हाल-सम्हाल कर बीज बोना और पुलकित होकर फ़सल काटना, मानो स्वयं तुम्हारे प्रियतम ही उसे खायंगे,

यह है, उन सभी वस्तुओं को, जिनकी तुम रचना करते हो, अपने प्राणों के श्वास से सजीव कर देना, और अनुभव करना कि तुम्हारे सभी स्वर्गवासी पूर्वज तुम्हारे आस-पास खड़े होकर तुम्हारा निरीक्षण कर रहे हैं।

मैंने अक्सर तुम्हें कहते सुना है, मानो नींद में बड़बड़ाते हो, "जो संगमरमर पर काम करता है और प्रस्तर में अपनी आत्मा की तस्वीर पाता है, वह खेत मे हल चलाने वाले से श्रेष्ठ है।

"और जो[1] इन्द्र-धनुष को पट पर मनुष्य की रूपरेखा देने के लिए आकाश से उतार लेता है वह हमारे पैरों की

---

1. चित्रकार

जूतियाँ बनाने वाले से श्रेष्ठ है।"

लेकिन मैं नींद में नहीं, धौले-दोपहर की जागृति में कहता हूँ कि समीरण घास के छोटे-छोटे फुनगों की अपेक्षा विशाल देवदार वृक्ष से अधिक लाड़ से बात नहीं करता।

और केवल वही श्रेष्ठ है जो वायु की वाणी को अपने प्यार से मधुरतर बनाये हुए गीत में परिवर्तित कर देता है।

श्रम प्रेम को प्रत्यक्ष करना है।

यदि तुम प्रेम-सहित श्रम नहीं कर सकते, बल्कि अरुचि से करते हो, तो अच्छा है कि तुम अपना काम छोड़ दो और मंदिर की सीढ़ियों के पास जा बैठो और उनके आगे हाथ पसारो जो आनन्द-पूर्वक श्रम करते हैं।

क्योंकि यदि तुम लापरवाही से रोटी सेकते हो तो तुम बेसवाद रोटी बनाओगे, जिससे मनुष्य की भूख भी भाग जायगी।

यदि तुमको अंगूरों का रस निकालने मे असंतोष है तो तुम्हारा असंतोष मदिरा में विष घोल देता है।

और भले ही तुम ऐसा गाते हो, जैसा गंधर्व गाते है, लेकिन गाने को प्यार नहीं करते, तो तुम मनुष्य के कानों को ऐसे भर दोगे कि वे दिन के कोलाहल और रात्रि के स्वर को भी न सुन सके।

: ८ :

हर्ष और शोक

तब एक स्त्री ने कहा :

अब हम से हर्ष और शोक के सम्बन्ध मे कुछ कहो ।

और उसने उत्तर दिया

तुम्हारा हर्ष है नग्न होकर प्रकट होने वाला तुम्हारा शोक।

और वही कुँआ, जिसमें से तुम्हारी हँसी उमड़ रही है, अनेक बार तुम्हारे आँसुओं से भरपूर रहा है।

इसके सिवा और कुछ हो ही कैसे सकता है ?

यह शोक जितनी अधिक गहराई तक तुम्हारे जीवन में कटाई करता है, उतना ही अधिक हर्ष तुम रख सकते हो।

वह प्याला, जिसमें तुम्हारी मदिरा भरी हुई है, क्या वही प्याला नहीं है जो कुम्हार के आवे मे पकाया गया था ?

और यह बाँसुरी, जो तुम्हारे हृदय का ग़म ग़लत करती है, क्या वही बाँस का टुकड़ा नहीं है जिसमें चाकुओं से छेद किये गए थे ?

जब तुममें हर्ष की उमंगे उठे तब अपने हृदय की तह में देखो तो तुम्हें ज्ञात होगा कि जो तुम्हे हर्ष प्रदान कर रहा

है, वह वही है, जिसने तुम्हे शोक दिया था।

और जब तुम शोक में डूबे हुए हो, तब फिर अपने अन्तरतम में झाँको तो तुम देखोगे कि वास्तव में तुम उसके लिए रो रहे हो, जिसने तुम्हें प्रसन्नता प्रदान की थी।

तुममें से कुछ लोग कहते हैं, "हर्ष शोक से श्रेष्ठ है।" और दूसरे कहते हैं, "नहीं, शोक श्रेष्ठ है।"

लेकिन मै तुमसे कहता हूँ,ये एक-दूसरे से न छूटने वाले साथी है।

साथ-ही-साथ ये आते है और यदि एक अकेला भोजन करते समय तुम्हारे साथ बैठा है, तो याद रखो कि दूसरा तुम्हारे बिस्तर पर सो रहा है।

वास्तव में तुम, तराजू की तरह, हर्ष और शोक के भार से झुकते-उठते रहते हो।

और केवल उस समय, जब कि तुम बिलकुल खाली होते हो, तुम स्थिर और सम रहते हो।

जब खजांची अपना सोना-चाँदी तोलने के लिए तुम्हे उठाता है तब तुम्हारे हर्ष और शोक नीचे-ऊपर होते ही हैं।

: ९ :

घर

तब एक राज आगे आया और बोला :

हमसे घरों के विषय मे कुछ कहिए।

और उसने उत्तर दिया ·

नगर के परकोटे के भीतर घर बनाने से पहले तुम अपनी कल्पनाओं से एक कुंज शून्य मे बनाओ।

क्योंकि जैसे सन्ध्या के धूमिल प्रकाश में तुम घर आते हो, वैसे ही तुम्हारे अन्तर का चिर-प्रवासी एकाकी बटोही भी आता है।

तुम्हारा घर तुम्हारा कुछ बड़ा शरीर है।

वह सूर्य के प्रकाश मे बढ़ता है और रात्रि की निस्तब्धता में सोता है, और वह भी सपनों से शून्य नहीं है; क्या तुम्हारा घर स्वप्न नहीं देखता ? और स्वप्न के देखते हुए शहर छोड़कर उपवनों मे और गिरि-शिखरों पर नहीं जाता ?

काश, मैं तुम्हारे घरों को अपनी मुट्ठी मे भर पाता और जिस तरह किसान खेत में बीज डालता है, उसी तरह मैं इन्हें जंगलों और मैदानों मे बिखरा पाता।

काश पहाड़ी घाटियाँ तुम्हारी राहें होती और हरियाली पगडंडियाँ तुम्हारी गलियाँ; ताकि तुम एक-दूसरे को ढूँढते द्राक्ष-कुंजों मे से गुजर सकते और भूमि की सुवास अपने कपड़ों में बसाकर लौट सकते ।

लेकिन ये बाते अभी होने वाली नहीं है ।

भयवश तुम्हारे पूर्वजों ने तुम्हे एक-दूसरे के अत्यन्त निकट इकट्ठा कर दिया है । और वह भय अभी कुछ अरसे और बना रहेगा; और कुछ अरसे और नगर का परकोटा तुम्हारे घरों को खेतों से अलग करेगा ।

और आरफ़ालीज़ निवासियो ! मुझे बताओ, तुम्हारे पास इन घरों मे क्या है ? और वह क्या है जिसकी तुम, दरवाजे बन्द रखकर,रखवाली करते हो ?

क्या वहाँ शान्ति है, तुम्हारी शक्ति को प्रकाशित करने वाली प्रशान्त प्रेरणा है ?

क्या वहाँ स्मृतियाँ है, वे चमकती हुई मीनारें, जो मन के शिखरों पर फैली होती है ?

क्या वहाँ सौन्दर्य है जो हृदय को काठ और पत्थर की बनी हुई वस्तुओं से खीचकर पावन पर्वत पर ले जाता है ?[1]

बताओ, है तुम्हारे घर मे ये चीजें ?

या वहाँ केवल भोग और भोग की लिप्सा है, जो आहिस्ता-आहिस्ता घर में मेहमान बनकर घुसती है, फिर मेज़बान बन बैठती है और अन्त मे मालकिन ?

---

१. कृत्रिमता से प्रकृति की ओर ले जाता है ।

अरे हाँ, वह तुम्हारी महत्तर आकांक्षाओं को अंकुश और चाबुक द्वारा अपनी कठपुतलियाँ बनाती है, जिस तरह जंगली पशुओं को पालतू बनाया जाता है।

उसके हाथ रेशम के हैं, लेकिन उसका हृदय लोहे का है।

वह तुम्हें लोरियाँ गाकर सुला देती है, सिर्फ तुम्हारी खाट के पास खड़ी होकर तुम्हारे शरीर के गौरव का उपहास करने के लिए।

वह तुम्हारी स्वस्थ चेतनाओं का मज़ाक उड़ाती है और उन्हें टूट जाने वाले बर्तनों की तरह घास-फूँस मे ढक कर रख देती है।[1]

वास्तव में, सुख की लालसा आत्मा की उत्कट भावना का खून कर देती है और शव की स्मशान-यात्रा मे खीसें निपोरती हुई चलती है।

परन्तु, हे अनन्त आकाश की संतानो, शान्ति मे भी अशान्त रहने वाले, तुम इसके जाल मे मत फँसो, न इसके पालतू बनो।

तुम्हारा घर जहाज़ का लंगर न बने[2], बल्कि मस्तूल बने;

वह किसी घाव की झिलमिलाती झिल्ली नहीं, बल्कि आँख की रक्षा करने वाली पलक बने।

तुम दरवाजों मे से गुज़र सको, इसके लिए तुम अपने

१. स्वस्थ चेतनाओं का प्रयोग नहीं होने देती।

२. प्रगति में बाधक न हो।

पंख समेटो मत, और कहीं छत से टकरा न जायं, इसके लिए सरों को झुकाओ मत, और कहीं दीवारें दरककर गिर न पड़ें, इसके लिए साँस लेने से डरो मत।

तुम उन मक़बरों में मत रहो जो मुर्दों ने जीवितों के लिए बनाए है।

भले ही भव्य और सुन्दर हो, लेकिन तुम्हारा घर न तो तुम्हारे राज़ों को छिपाए और न तुम्हारी तृष्णाओं का आश्रय हो।

क्योंकि वह, जो तुममें अनन्त है, आकाश के महल में रहता है, जिसका फाटक प्रभात का कोहरा है और जिसकी खिड़कियाँ रात्रि की रागनियाँ और खामोशियाँ हैं।

: १० :

वस्त्र

और एक जुलाहे ने कहा :

हमसे वस्त्रों के विषय में कुछ कहो।

और उसने उत्तर दिया :

तुम्हारे वस्त्र तुम्हारे बहुत से सुन्दर अंश को छिपा लेते हैं, लेकिन असुन्दर को नहीं।

यद्यपि तुम वस्त्रों मे अपनी गुप्तता की आज़ादी खोजते हो, लेकिन तुमको प्राप्त होते है बन्धन और बाधा।

काश धूप और वायु से तुम्हारा मिलन तुम्हारी त्वचा द्वारा अधिक होता और वस्त्रों द्वारा कम।

क्योंकि जीवन के प्राण सूर्य के प्रकाश में हैं और जीवन के हाथ हवा के झोंकों में है।

तुममे से कुछ कहते हैं, "हम जो कपड़े पहनते हैं, उन्हे उत्तर की वायु ने बुना है।"

और मैं कहता हूँ, "हॉ वह उत्तर की वायु ने ही बुना है।"

लेकिन स्नायुओं की कमनीयता के सूत से लज्जा के करघे पर।

और जब उसका कार्य सम्पन्न हो गया, वह जंगल में खिल-खिलाकर हँस पड़ी।

भूलो मत कि मलिन-मनों की आँखों के सम्मुख लज्जा ढाल के समान है।

और जब मलिन-मन ही न होंगे तब लज्जा केवल एक बेड़ी और विकृत करने वाली वस्तु के अतिरिक्त क्या होगी?

और भूलो मत कि धरती तुम्हारी नंगी पग-तलियों का स्पर्श पाकर प्रसन्न होती है और पवन तुम्हारे केशों से अठखेलियाँ करना चाहता है।

: ११ :

क्रय-विक्रय

और एक व्यापारी बोला :

हमसे क्रय-विक्रय के सम्बंध में कुछ कहो।

उसने जवाब देते हुए कहा :

धरती अपनी उपज तुम्हारे हवाले करती है। और अगर तुम अपनी अंजलि भरना ही जान लो, तो तुम्हे कोई अभाव नहीं रहेगा।

पृथ्वी के उपहारों के लेने-देने में ही तुमको भरपूर प्राप्ति हो जायगी और तुम्हें संतोष होगा।

लेकिन अगर यह लेना-देना प्रेम और उदार न्याय-पूर्ण न होगा तो वह कुछ लोगों को लोभ की ओर ले जायगा और कुछ लोगों को भूखा रहने की ओर

ओ समुद्र, खेत और द्राक्ष-कुंजों में मेहनत करने वालो, जब बाजार में तुम जुलाहों, कुम्हारों और पन्सारियों से मिलो, तब—

पृथ्वी की महती आत्मा से तुम्हारे बीच आने की और तराजुओं को तथा वस्तुओं के मूल्य-निर्धारण के व्यवहार को

शुद्ध करने की प्रार्थना करो।

और अपने क्रय-विक्रय मे उन खाली-हाथ निठल्लों को बरदाश्त मत करो, जो अपने शब्दों को तुम्हारे श्रम के बदले में बेचना चाहते हैं।

ऐसे लोगों से कहो :

"चलो हमारे साथ खेतों पर, या हमारे भाइयों के साथ समुद्र पर जाओ और जाल डालो ;

"क्योंकि, पृथ्वी और समुद्र जितने हमारे प्रति उदार है, उतने ही तुम्हारे प्रति भी होंगे।"

और यदि वहाँ गाने वाले, नाचने वाले और बन्सी बजाने वाले आएँ तो उनके उपहारों को भी खरीदो।

क्योंकि वे भी फल-फूल और धूप[1] के ग्राहक है और भले ही उनके लाये हुए उपहार स्वप्न के तारों से बनाये गए हैं, फिर भी वे तुम्हारी आत्मा के वस्त्र और भोजन है।

अर हाट से बाहर आने के पहले, तुम्हें चाहिए कि यह तलाश करो कि कोई खाली हाथ तो वापस नही जा रहा।

क्योंकि पृथ्वी की महत् आत्मा को पवन की शैया पर चैन की नींद नहीं आयगी, जब तक कि तुममें से छोटे-से-छोटे के अभाव की संतुष्टि नहीं हो जायगी।

---

१. जलाने की सुगंधि।

: १२ :

अपराध और दण्ड

इसके बाद नगर का एक न्यायाधीश सामने आया और बोला :

अब हमसे अपराध और दण्ड के विषय मे कहो।

और उसने उत्तर देते हुए कहा :

जब तुम्हारी आत्मा[1] पवन पर सवार होकर भ्रमण करने गई होती है और जब तुम अकेले और असंरक्षित रह जाते हो, तभी तुम दूसरों के प्रति, फलतः अपने ही प्रति, अपराध करते हो।

और उसे अपराध को करने के कारण तुम्हे प्रभु के दरवाज़े को खटखटाते हुए कुछ समय तक उपेक्षित रहकर प्रतीक्षा करनी होगी।

तुम्हारा दैवी-भाव[2] सागर के समान है।

वह सदैव अदूषित किया हुआ रहता है।

और आकाश की भाँति वह केवल पंख वालों को ही

---

१ यहाँ पर विवेक-बुद्धि के अर्थ मे। २. सात्त्विक-अंश, कल्याणकारी प्रवृत्ति।

ऊपर उठाता है।

और तुम्हारा दैवी-भाव सूर्य के समान भी है।

न तो वह छछूंदर[1] के रास्तों को जाता है, न वह साँपों के बिलों की तलाश करता है।

किन्तु तुम्हारे अस्तित्व में तुम्हारा दैवी भाव अकेला नहीं रहता। तुममें बहुत-कुछ तो अभी भी मानव है, और बहुत-कुछ अभी तक मानव नहीं बल्कि अनघड़ बौना[2] है जो धुन्ध में अपनी जागृति को खोजता हुआ निद्रित अवस्था में घूमता है।

और तुम्हारे अंतर के मानव के विषय में मैं अब कुछ कहूँगा।

क्योंकि वही अपराध और अपराध के दण्ड को जानता है, न कि तुम्हारा दैवी भाव या धुन्ध मे घूमने वाला बौना।

अक्सर मैंने तुम्हें किसी अपराध करने वाले की आलोचना करते सुना है, जैसे वह तुम्हीं में से एक नहीं है बल्कि तुम्हारे लिए अजनबी और तुम्हारे संसार मे अनधिकार प्रवेश करने वाला है।

किन्तु मेरा कथन है कि कोई पवित्र और पुण्यात्मा भी उस उच्चतम से ऊँचा नहीं उठ सकता, जो तुममे हरेक में मौजूद है।

उसी प्रकार कोई दुष्ट और दुर्बल उस निकृष्टतम से नीचे नहीं गिर सकता, जो तुम मे मौजूद है।

और जैसे एक पत्ती भी सम्पूर्ण वृक्ष की ख़ामोश जान-

---

१. वक्रता और धोखेबाज़ी नहीं जानता।　२. नीच प्रवृत्ति।

कारी के बिना पीली नहीं पड़ती, वैसे ही अपराधी तुम सबकी-छिपी हुई इच्छा के बिना अपराध नहीं कर सकता।

एक जुलूस की भाँति तुम इकट्ठे अपने दैवी-भाव की ओर जाते हो।

तुम्हीं राह हो और राहगीर भी।

और जब तुम में से कोई गिरता है, तो पीछे आने वाले लोगों के लिए गिरता है, ठोकर खिलाने वाले पत्थर से साव-धान करने के लिए।

हाँ, वह गिरता है आगे जाने वालों के कारण, जो, यद्यपि अधिक फुरतीले और अचूक चाल चलने वाले थे, फिर भी जिन्होंने ठोकर खिलाने वाले पत्थर को हटाया नहीं।

और सुनो, चाहे मेरे शब्द तुम्हारे हृदय को भारी लगें,

जिसका वध किया गया है, अपने वध किये जाने के अभियोग से मुक्त नहीं है।

और जिसे लूटा गया है, वह अपनी लूट के लिए निर्दोष नहीं है।

और पुण्यात्मा दुष्ट द्वारा किये हुए कर्मों के सम्बन्ध में निर्दोष नहीं है।

और स्वच्छ हाथों वाला, पाप से हाथ रँगने वाले के कर्मों में निष्कलंक नहीं है।

यही नहीं, अपराधी भी प्राय: आहत व्यक्ति द्वारा पीड़ित होता है।

और भी, अक्सर दण्डित व्यक्ति निर्दोष और अकलंकित व्यक्तियों का भार उठाने वाला होता है।

तुम न्यायी को अन्यायी से, सज्जन को दुर्जन से जुदा नहीं कर सकते।

क्योंकि वे सूर्य के सम्मुख इस प्रकार पास-पास खड़े होते हैं जिस प्रकार काले और सफेद धागे साथ-साथ बुने जाते हैं।

और जब काला धागा टूटता है तो जुलाहे को सारा कपड़ा देखना पड़ता है। और करघे की भी जॉच करनी पड़ती है।

अगर तुम मे से कोई किसी असती पत्नी का न्याय करने लगे,

तो उसे चाहिए कि वह उसके पति के हृदय को भी कॉटे पर तौले और माप-दण्ड से उसकी आत्मा को नापे।

किसी अपराधी को कोड़े लगाने वाले को चाहिए कि वह, जिसके प्रति अपराध किया गया है, उसके अंतरंग में भी झॉककर देखे।

और यदि तुम मे से कोई पुण्य के नाम पर दण्ड देना चाहे और पाप के वृत्त पर कुल्हाड़ी चलाना चाहे तो उसे चाहिए कि उसकी जड़ों को भी देखे।

और निश्चय ही, वह भले और बुरे, फल-युक्त और फल-विहीन की जड़ों को पृथ्वी के प्रशांत हृदय में परस्पर गुँथा हुआ पायगा।

और न्याय-प्रिय न्यायाधीशो !

तुम उसे क्या सज़ा दोगे जो शरीर से ईमानदार है लेकिन मन से चोर है ?

और तुम उस व्यक्ति को क्या दण्ड दोगे जो देह की हत्या करता है लेकिन जिसकी खुद की आत्मा का हनन किया गया है ?

और उस पर तुम मुकदमा कैसे चलाओगे जो आचरण मे तो धोखेबाज़ और ज़ालिम है लेकिन जो खुद संत्रस्त और अत्याचार-पीड़ित है ?

और तुम उन्हे कैसे सज़ा दोगे जिनका पश्चात्ताप पहले ही उनके दुष्कृत्यों से अधिक है ?

और क्या यह पश्चात्ताप ही उस कानून का दिया हुआ न्याय नहीं है, जिसका पालन करने का प्रयास तुम भी करते रहते हो ?

फिर भी तुम निरपराध के हृदय पर पश्चात्ताप नहीं लाद सकते और न किसी अपराधी के हृदय पर से उठा सकते हो।

विना बुलाए रात्रि के समय वह आता है ताकि लोग जागें और आत्म-निरीक्षण करे।

और तुम, जो न्याय को जान लेना चाहते हो, उसे कैसे जान सकते हो, यदि सारे कार्यों को पूर्ण प्रकाश मे नहीं देखते।

तभी तुम जान सकते हो कि उन्नत और पतित दोनों तुम्हारे बौने-अस्तित्व की रात्रि और दैवी-अस्तित्व के दिवस के संधि-स्थल के धुँधले प्रकाश मे खड़े हुए एक ही व्यक्ति है।

और मन्दिर की कोण-शिला उसकी नीव मे सबसे नीचे गड़े हुए पत्थर से ऊँची नहीं है।

: १३ :

क़ानून

तब एक वकील ने कहा :

मालिक, कानून के विषय में आपकी क्या राय है ?

और उसने उत्तर दिया :

तुम्हें क़ायदे घड़ने में मज़ा आता है,

और उससे भी अधिक तुम्हें भंग करने में,

जैसे समुद्र के किनारे पर खेलने वाले बालक दत्त-चित्त होकर बालू के महल बनाते हैं और फिर खिलखिलाते हुए उन्हें तोड़ डालते हैं।

लेकिन जब तुम रेत के भवन बनाते हो, समुद्र किनारे पर और भी रेत ला-लाकर डालता रहता है, और जब उन्हें मिटा देते हो, तब वह भी तुम्हारे साथ अट्टहास कर उठता है।

निश्चय ही, समुद्र सदा निर्दोष की हँसी मे साथ देता है।

किन्तु ऐसे लोगों के बारे में क्या कहा जाय। जिनके लिए जीवन एक समुद्र नहीं है और मनुष्य-निर्मित कानून केवल बालू के भवन नहीं है;

बल्कि जिनके लिए जीवन एक चट्टान है जिसको कानून एक छेनी से काटकर अपनी जैसी मूर्त्ति मे घड़ लेते हैं।

उस लंगड़े के बारे में क्या कहा जाय जो नाचने वालों से घृणा करता है ?

उस बैल के बारे में क्या कहा जाय जो जुए को पसंद करता है और जंगल के बारहसिंगों और हरिणों को गुमराह और आवारा समझता है ?

उस बूढ़े साँप के बारे में क्या कहा जाय जो अपनी केंचुली उतारने मे समर्थ नहीं है और दूसरों को नंगा और निर्लज्ज बताता है ?

अथवा उसके बारे में क्या कहा जाय जो विवाह-भोज में सबसे पहले आकर खाने पर डट जाता है और खाते-खाते थक जाने पर अपना रास्ता नापता है और कहता जाता है कि सब दावतें क़ानून-विरुद्ध हैं और दावते खाने वाले कानून तोड़ने वाले है ?

इन सबके विषयमे मै इसके सिवा और क्या कह सकता हूँ कि वे भी सूर्य के प्रकाश में ही खड़े हैं, लेकिन सूर्य की ओर पीठ करके।

वे केवल अपनी छायाएँ देखते है और उनकी छायाएँ उनके कानून हैं।

और सूर्य उनके लिए छायाएँ प्रतिबिम्बित करने वाले के सिवा है ही क्या ?

लेकिन कानूनों को स्वीकार करने का अर्थ नीचे झुककर पृथ्वी पर अपनी छायाओं की रूप-रेखा अंकित करने के सिवा और है ही क्या ?

लेकिन सूर्याभिमुख होकर चलने वाले तुम लोगों को भूमि पर खींची हुई कौन-सी प्रतिमाएँ पकड़े रख सकती हैं?

और पवन के साथ यात्रा करने वाले तुम लोगों को पथ-प्रदर्शन कौन-सा पवन-चक्र[1] कर सकता है?

यदि तुम अपना जुआ तोड़ फैको, लेकिन मनुष्य-निर्मित किसी कारागार के द्वार पर नहीं हो तो तुम्हे मनुष्य का कौन-सा कानून बाँध सकता है?

यदि तुम नाचो, लेकिन मनुष्य-निर्मित लौह-शृंखलाओं से टकराओ नहीं, तो तुम्हे किन कानूनों का डर है?

और यदि तुम अपने कपड़े फाड़ फैको, लेकिन किसी के मार्ग मे डालो नही, तो ऐसा कौन हो सकता है जो तुम्हे न्याय की कुर्सी के सामने खड़ा करे?

हे आरफालीज़-निवासियो, तुम ढोल की आवाज दबा सकते हो, और वीणा के तारों को ढीला कर दे सकते हो, लेकिन चकवे को न गाने की आज्ञा कौन दे सकता है?

---

१. हवा का रुख़ बताने वाला चक्र

स्वतंत्रता

और एक व्याख्यानदाता बोला :

हमसे स्वतंत्रता के संबंध मे कुछ कहो।

उसने उत्तर दिया :

मैंने तुम्हे नगर-द्वार और अलाव[१] पर अपनी स्वतंत्रता को साष्टाग दण्डवत् करते और उसकी पूजा करते[२] देखा है,

जिस प्रकार गुलाम अपने अत्याचारी मालिक की मिन्नत और स्तुति करता है, यद्यपि वह उन्हे मार ही डालता है।

हाँ, हाँ, मैंने मन्दिर के कुंज और किले की आड़ में तुम में से अधिक-से-अधिक आजाद आदमी को भी अपनी स्वतंत्रता को जुआ और हथकड़ी बनाकर धारण किये हुए देखा है।

और मेरा हृदय भीतर-ही-भीतर रो पड़ा है।

क्योंकि तुम स्वतंत्र तभी होगे जब स्वतंत्र होने की इच्छा

---

१. देहातों में लोग जाड़ों में आग जलाकर उसके चारों ओर बैठकर बातें किया करते हैं।

२. चर्चाओं में स्वतंत्रता के प्रति श्रद्धा प्रकट करते।

भी तुम्हें बंधन जान पड़ेगी और जब स्वाधीनता को तुम ध्येय और सिद्धि कहना छोड़ दोगे।

वास्तव में तुम स्वतंत्र तभी होगे जब तुम्हारे दिन चिन्ता-रहित नहीं होंगे और न रातें वासना और शोक से खाली होंगी,

बल्कि जब ये चीज़ें तुम्हें पीसती होंगी और फिर भी तुम इनसे ऊपर उठोगे—नग्न और मुक्त।

और तुम अपने दिन-रातों के ऊपर कैसे उठ सकते हो, जब तक कि तुम उन ज़ंजीरों को नहीं तोड़ते जिन्हे कि तुमने अपने ज्ञान के सूर्योदय मे अपनी दोपहरियों के चारो तरफ कस दिया है?

यथार्थ में, जिसे तुम स्वाधीनता कहते हो वह इनमे सबसे अधिक मज़बूत ज़ंजीर है,

यद्यपि इसकी कड़ियाँ धूप में चमकती है और तुम्हारी आँखों को चौंधिया देती हैं।

और वे हैं क्या, तुम्हारे स्वयं के टुकड़े ही तो, जिन्हें त्यागकर तुम स्वतंत्र होना चाहते हो।

तुम किसी अन्याय-पूर्ण कानून को रद्द करना चाहते हो, परंतु वह क़ानून कभी तुमने अपने ही हाथों से अपने ही ललाट पर लिखा था।

तुम उसे मिटा नहीं सकते भले ही कानून की किताबें जला दो अथवा अपने न्यायाधीशों के कपालों को धोने के लिए तुम समुद्र उँडेल दो।

तुम किसी ज़ालिम राजा को सिंहासन से उतारना चाहते हो तो पहले यह निश्चय कर लो कि तुम्हारे दिल में जो उसका सिंहासन स्थित है वह भी नष्ट हो चुका है।

क्योंकि, यदि स्वतंत्र और स्वाभिमानी की स्वतंत्रता में अत्याचार और स्वाभिमान मे बेशर्मी का अंश नहीं है तो उस पर कोई अत्याचारी शासन कर ही कैसे सकता है ?

तुम किसी चिन्ता को उतार फेंकना चाहते हो, परंतु उस चिन्ता को तुमने स्वयं चुना है,किसीने तुमपर लादा नहीं।

तुम किसी भय को भगाना चाहते हो परंतु उसका निवास-स्थान स्वयं तुम्हारे हृदय मे है, न कि उसके हाथ में, जो तुम्हे भयभीत करता है।

वास्तव मे, वे सभी वस्तुएँ एक-दूसरे से सटकर तुम्हारे ही अन्दर मौजूद रहती हैं, जिनको तुम चाहते हो और जिनसे तुम डरते हो, जिनसे तुम घृणा करते हो और जिनकी तुम अभिलाषा करते हो, जिनके पीछे तुम दौड़ रहे हो और जिनसे तुम छुटकारा चाहते हो।

ये सभी वस्तुएँ तुम्हारे अंतराल मे प्रकाश और छाया की तरह, एक-दूसरे का अनुसरण करने वाले जोड़ों के रूप मे, घूमती रहती है।

और जब छाया मंद पड़ती है और मिट जाती है तो वह प्रकाश, जो विदा लेने में विलम्ब कर रहा है, दूसरे प्रकाश के लिए छाया बन जाता है।

इस प्रकार जब तुम्हारी स्वतंत्रता, जब अपनी बेड़ियाँ तोड़ देती है, तब उच्चतर स्वतंत्रता के लिए बेड़ियाँ बन जाती है।

: १५ :

विवेक और वासना

और पुजारिन ने फिर कहा :

हमसे विवेक और वासना के सम्बन्ध में कुछ कहो।

और उसने उत्तर दिया :

अनेक बार तुम्हारा अन्तःकरण संग्राम-भूमि बनता है, जहाँ तुम्हारा विवेक और तुम्हारी न्याय-बुद्धि तुम्हारी वासना एवं तृष्णा के विरुद्ध युद्ध करती है।

काश मैं तुम्हारे अन्तःकरण में शान्ति-निर्माता बन सकता और तुम्हारे तत्त्वों की पारस्परिक विषमता और प्रतिस्पर्द्धा को एकता और लय में बदल सकता!

किन्तु, यह मैं कैसे कर सकता हूँ, यदि तुम स्वयं भी शान्ति-निर्माता—नहीं-नहीं—अपने सभी तत्त्वों के प्रेमी नहीं बनते?

तुम्हारा विवेक और तुम्हारी वासना, तुम्हारी समुद्र-प्रवासी आत्मा के पाल और पतवार हैं।

यदि तुम्हारी पाल या पतवार टूट जाय तो तुम लहरों द्वारा उछाले जाकर कहीं को बहोगे या फिर बीच समुद्र में जहाँ-के-तहाँ रुके रहोगे।

क्योंकि, विवेक एकाकी राज करते हुए मर्यादित करनेवाली शक्ति है और बे-लगाम वासना वह ज्वाला है जो स्वयं अपने को जलाकर समाप्त करने तक जलती है।

अतएव तुम्हारी आत्मा तुम्हारे विवेक को वासना की ऊँचाई तक उठाए ताकि वह गा सके।

और तुम्हारी वासना को विवेक से संचालित होने दो ताकि तुम्हारी वासना नित्य ही अपने विनाश मे से नया जन्म पा सके और अनल-पक्षी[1] के समान भस्म होकर पुनः जीवित हो सके।

मैं चाहता हूँ कि तुम अपने विवेक और अपनी तृष्णा का सत्कार अपने घर आए हुए दो प्रिय अतिथियों के समान करो।

निश्चय ही, एक अतिथि का दूसरे अतिथि से बढ़कर सत्कार तुम नहीं करोगे। क्योंकि, जो एक का अधिक ध्यान रखता है, वह दोनों के प्रेम और विश्वास से हाथ धो बैठता है।

जब तुम पहाड़ियों मे, नीम की शीतल छाया मे, खेतों और मैदानों की शान्ति और गम्भीरता में भाग लेते हुए बैठो, तब तुम्हारा हृदय उस शान्ति मे बोले, "ईश्वर विवेक में निवास करता है।"

और जब तूफान उठे, प्रबल वायु जंगलों को झकझोरे,

---

१. ग्रीस में किंवदन्ती है कि फिनिक्स पक्षी मृत्यु समीप आने पर अग्नि में गिरकर जल जाता है और कुछ क्षण बाद उसकी राख में से वैसा-का-वैसा एक पक्षी निकलकर आकाश में उड़ने लगता है।

और बिजली और बादलों की कड़क आकाश की भव्य भीषणता घोषित करे, तब तुम्हारा हृदय भय के साथ कहे, "ईश्वर वासना में विचरण करता है।"

और चूँकि तुम भी प्रभु के लोक में एक साँस हो, ईश्वर के जंगल मे एक पत्ते हो, इसलिए तुम भी विवेक में निवास और वासना मे विचरण करो।

: १६ :

दुःख

और एक स्त्री बोली :

हमसे दुःख के सम्बन्ध में कुछ कहो।

और उसने कहा :

तुम्हारा दुःख उस छिलके का तोड़ा जाना है, जिसने तुम्हारे ज्ञान को अपने भीतर छिपा रक्खा है।

जिस तरह फल के कठोर छिलके का टूटना अनिवार्य है, ताकि उसका हृदय सूर्य के प्रकाश मे आ सके, उसी तरह तुमको भी दुःख का परिचय प्राप्त होना चाहिए।

यदि तुम अपने जीवन के रोजमर्रा के चमत्कारों के प्रति अपने हृदय को आश्चर्य मे रख सको तो तुम्हें तुम्हारा दुःख तुम्हारे सुख की अपेक्षा कम आश्चर्यपूर्ण प्रतीत नहीं होगा।

और तुम अपने हृदय की ऋतुओं[1] को उसी तरह स्वीकार करोगे जिस तरह तुम ऋतुओं को स्वीकार करते हो, जो तुम्हारे खेतों से गुजरती हैं। और तुम शान्तिपूर्वक अपने शोक के पतझड़ों को देख सकोगे।

---

१. परिवर्तन।

अपने अधिकांश दुःख को तुमने स्वयं चुना है।

दुःख एक कड़वी औषधि है, जिससे तुम्हारा अन्तर्वासी चिकित्सक तुम्हारे रोगी अस्तित्व को स्वस्थ करता है।

इसलिए अपने चिकित्सक पर विश्वास करो और उसकी दी हुई औषधि को चुपचाप शान्ति से पी लो;

क्योंकि उसके हाथ यद्यपि कठोर और भारी हैं, अदृश्य के कोमल हाथ से संचालित होते हैं।

और उसका दिया हुआ प्याला यद्यपि तुम्हारे ओठों को जलाता है, फिर भी वह उस मिट्टी से बनाया गया है जिसे 'कुम्हार' ने अपने पवित्र आँसुओं से सींचा है।

: १७ :

आत्म-ज्ञान

और एक आदमी ने कहा :

आत्म-ज्ञान के सम्बन्ध में हमसे कुछ कहो।

और उसने कहा :

तुम्हारे हृदय नि:शब्दता मे दिवस और रात्रि के रहस्यों को जानते हैं।

परन्तु तुम्हारे कान तुम्हारे हृदय के ज्ञान के शब्द के प्यासे हैं।

जो तुम विचारों में सदा जानते रहे हो उसे तुम शब्दों में जानना चाहते हो।

ऐसा करना ठीक भी है।

तुम्हारी आत्मा के गुप्त जल-स्रोत को बाहर फूटकर समुद्र की ओर कल-कल करते हुए बहना ही चाहिए।

और तब तुम्हारी अतल गहराइयों का कोष तुम्हारे नेत्रों के आगे प्रकट हो जायगा।

परन्तु तुम्हारे अज्ञात खजाने को तौलने के लिए तराजू न हो।

और किसी बॉस या थाह लेने वाली डोरी से अपने ज्ञान की गहराई नापने का प्रयत्न न करना;

क्योंकि आत्मा अगाध और असीम समुद्र है।

"मैंने सत्य को पा लिया," ऐसा मत कहो, बल्कि कहो, "मैंने एक सत्य पाया है।"

"मैंने आत्मा का मार्ग पा लिया," ऐसा मत कहो, बल्कि कहो, "मैंने अपने मार्ग पर चलते हुए आत्मा के दर्शन किये हैं।"

क्योंकि आत्मा सभी रास्तों पर चलती है। आत्मा एक ही लीक पर नहीं चलती, न वह नरकुल की तरह उगती है;

आत्मा असंख्य पंखुड़ियों वाले कमल के सदृश अपने आपको विकसित करती है।

: १८ :

अध्यापन

तब एक अध्यापक ने कहा :

हमसे अध्यापन के विषय में कुछ कहो।

और उसने कहा :

तुम्हारे ज्ञान के उषा-काल में, जो कुछ पहले से ही अर्द्ध-निद्रित अवस्था में विद्यमान है, उसके अतिरिक्त कोई भी तुम्हारे आगे कुछ प्रकट नहीं कर सकता।

जो अध्यापक अपने अनुगामियों में मन्दिर की छाया तले विचरण करता है, वह उन्हे अपने ज्ञान का अंश नहीं, बल्कि अपना विश्वास और वात्सल्य प्रदान करता है।

यदि वह, वास्तव मे, बुद्धिमान है तो वह तुम्हें अपने ज्ञान-मन्दिर में प्रवेश करने के लिए नहीं कहता, बल्कि वह तुम्हें तुम्हारी बुद्धि की दहलीज तक ले जायगा।

खगोल-शास्त्रज्ञ अपने आकाश-सम्बन्धी ज्ञान के विषय मे तुमसे चर्चा कर सकता है, किन्तु वह अपना ज्ञान तुम्हें प्रदान नहीं कर सकता।

गायक गाकर तुम्हें सर्वत्र-व्यापी लय में से कुछ सुना सकता है, परन्तु वे कान नहीं दे सकता जो उस लय को पकड़

लेते हैं, न उसको प्रतिध्वनित करने वाली आवाज़ ही।

और निपुण गणितज्ञ तुमसे तौल और माप के लोक की बातें कह सकता है, लेकिन वह तुम्हें वहाँ ले नहीं जा सकता।

क्योंकि, एक मनुष्य की दर्शन-शक्ति दूसरे मनुष्य को अपने पंख नहीं दे सकती।

और जैसे ईश्वर की दृष्टि में तुम सब अलग-अलग खड़े हो, वैसे ही तुम में से प्रत्येक को भी अपने ईश्वरीय ज्ञान और लौकिक अनुभूति में अकेला रहना चाहिए।

: १६ :

मित्रता

और एक युवक ने कहा :

हमसे मित्रता के विषय मे कुछ कहो।

और उसने उत्तर दिया :

तुम्हारा मित्र तुम्हारे अभावों की पूर्ति है।

वह तुम्हारा खेत है, जिसमे तुम प्रेम का बीज बोते हो और कृतज्ञता का फल प्राप्त करते हो।

वह तुम्हारा भोजन-गृह है और वही तुम्हारा अलाव।

क्योंकि, तुम उसके पास अपनी भूख लेकर जाते हो और शान्ति पाने की इच्छा से उसे तलाश करते हो।

जब तुम्हारा मित्र तुम्हारे सामने अपना दिल खोलकर रखे तो तुम अपने मन के 'न' को प्रकट करने मे मत डरो और न 'हाँ' कहने में झिझको।

और जब वह चुप होता है, तब भी तुम्हारा हृदय उसके दिल की आवाज़ सुनना बंद नही कर देता।

क्योंकि मित्रता मे, शब्दों की सहायता के बिना ही सारे विचार, सारी कामनाएँ, और सारी आशाएँ अव्यक्त आनन्द के साथ पैदा होती और उपभोग मे आती है।

जब तुम अपने मित्र से विदा हो तो शोक मत करो।

क्योंकि, तुम उसमें जिस वस्तु को सबसे अधिक प्यार करते हो, वही उसकी अनुपस्थिति में अधिक स्पष्ट हो सकती है, जैसे एक पर्वतारोही को नीचे मैदान से पर्वत अधिक स्पष्ट और सुन्दर दिखाई देता है।

आत्मीयता को गहरा बनाते रहने के सिवा तुम्हारी मित्रता में कोई और प्रयोजन नहीं होना चाहिए।

क्योंकि, जो प्रेम अपने ही रहस्य का घूँघट खोलने के अतिरिक्त कुछ और खोजता है, वह प्रेम नहीं, एक जाल है जिसमें निकम्मी वस्तु के सिवा और कुछ नहीं फँसता।

तुम्हारी प्रिय-से-प्रिय वस्तु अपने मित्र के लिए हो।

जिसने तुम्हारे जीवन-समुद्र का भाटा[1]-उतार देखा है उसे उसका ज्वार[2] भी देखने दो।

क्योंकि मित्र क्या ऐसी वस्तु है जिसे तुम समय की हत्या करने के लिए खोजते हो ?

सदैव समय को सजीव करने के लिए उसे खोजो;

क्योंकि उसका काम तुम्हारे अभाव की पूर्ति करना है, न कि तुम्हारे खालीपन को भरना।

और मैत्री के माधुर्य में हास्य का स्फुरण हो और उल्लास का विनिमय;

क्योंकि नन्हीं-नन्हीं चीजों के ओस-कणों में हृदय अपना प्रभात देखता है और ताज़ा हो उठता है।

---

१. मुसीबत में साथ दिया है।

२. उन्नति के दिनों में उसे साथ रखो।

: २० :

वार्त्तालाप

और तब एक विद्वान् ने कहा :

हमसे वार्त्तालाप के विषय मे कुछ कहो।

और उसने उत्तर दिया :

जब तुममे और तुम्हारे विचारों मे शान्ति नहीं रह पाती तब तुम बातचीत करते हो।

जब तुम अपने हृदय के एकांत मे और अधिक निवास नहीं कर सकते तब तुम अपने ओठों पर वास करते हो, और वाणी परिवर्तन तथा विनोद का साधन है।

और तुम्हारी अधिकांश चर्चाओं मे विचार का कचूमर निकाल दिया जाता है।

क्योंकि, विचार आकाश का पक्षी है जो शब्दो के पिंजरे मे अपने पंख भले ही फड़फड़ा ले, लेकिन उड़ नहीं सकता।

तुम में से अनेक अकेलेपन से डरकर किसी बातूनी की खोज करते हैं।

क्योंकि, एकांत की नीरवता उनकी आँखो के सामने

उनका नंगा रूप प्रकट कर देती है और वे उससे भागना चाहते हैं।[1]

और कुछ लोग बात करते हुए अनजाने से, पूर्व-विचार के किसी सत्य को प्रकट कर देते हैं जिसे वे स्वयं नहीं समझते।

और कुछ लोग ऐसे हैं, जिनके हृदय में सत्य है, लेकिन वे उसे शब्दों में व्यक्त नहीं करते।

ऐसे ही लोगों के हृदय में आत्मा लयपूर्ण संगीत में निवास करती है।

जब तुम अपने मित्र से सड़क पर या हाट-बाजार में मिलो तब तुम्हारी भावना ओठों को गति दे और तुम्हारी जिह्वा का संचालन करे।

तुम्हारी वाणी की वाणी उसके कानों के कान में प्रवेश करे।

क्योंकि उसकी आत्मा तुम्हारे हृदय के सत्य को सम्हाल कर रखेगी, जिस तरह जब मदिरा के रंग की याद नहीं रहती और प्याला सामने नहीं रहता तब भी उसका स्वाद याद रहता है।

---

१. अपना नग्न रूप देखना पसंद नहीं करते।

: २१ :

समय

और एक खगोल-शास्त्रीज्ञ ने कहा :

मालिक, समय के सम्बन्ध मे कुछ कहो।

और उसने उत्तर दिया :

तुम माप-हीन और असाप्य समय की माप करना चाहते हो।

समय और ऋतु के अनुसार तुम अपने व्यवहार को व्यवस्थित और आत्मा की गति को भी संचालित करना चाहते हो।

समय को तुम एक स्रोत बनाना चाहते हो, जिसके किनारे बैठकर तुम उसके प्रवाह का अवलोकन करना चाहते हो।

लेकिन तुम्हारे अंदर का कालातीत[1] तुम्हारे जीवन की कालातीतता से परिचित है।

और जानता है कि बीता हुआ कल आज की स्मृति है और आने वाला कल आज का स्वप्न।

---

१. समय की सीमा के पार रहने वाला, ईश्वर।

और वह जो तुम्हारे हृदय में जाता है और चिन्तन करता है, अब भी उसी आदि क्षण की सीमा मे निवास करता है, जिस क्षण ने आकाश मे नक्षत्रों को छितराया था।

तुममें से कौन अनुभव नहीं करता कि उसकी प्रेम करने की शक्ति असीम है ?

और फिर भी कौन यह अनुभव नहीं करता कि वही प्रेम, जो सीमाहीन है, उसीके अस्तित्व के केन्द्र में केन्द्रित रह-कर न तो एक प्रेम-भावना से दूसरी प्रेम-भावना की ओर, और न एक प्रेम-लीला से दूसरी प्रेम-लीला की ओर अग्रसर होता है ?

और क्या प्रेम की भाँति ही समय भी अविभाज्य और अचल नहीं है ?

लेकिन यदि तुम अपने विचार में समय को ऋतुओं मे मापना चाहते हो तो प्रत्येक ऋतु को अन्य सारी ऋतुओं पर घेरा डालने दो।

और आज को स्मृति द्वारा अतीत का और चाह द्वारा भविष्य का आलिंगन करने दो।

: २२ :

भलाई-बुराई

और नगर के एक बुजुर्ग ने कहा :

हमसे भलाई और बुराई के विषय मे कुछ कहो।

और उसने उत्तर दिया :

तुममे जो भलाई है, उसके विषय में मैं कह सकता हूँ, बुराई के विषय में नहीं।

और बुराई है क्या—अपनी भूख और प्यास से सताई हुई भलाई ही तो।

जब भलाई को भूख लगती है तब वह अंधेरी गुफाओं में भी अपनी खुराक खोजती है, और जब उसे प्यास लगती तो सड़ा पानी भी पी जाती है।

जब तुम स्वरूप के साथ एक-रूप होते हो तब तुम भले हो;

लेकिन जब तुम स्व-रूप के साथ एक-रूप नहीं होते तब भी बुरे नहीं हो।

क्योंकि विभाजित-घर चोरों की मॉद नहीं है—विभाजित-घर ही है।

और एक बे-पतवार नौका खतरनाक द्वीपों में लक्ष्य-हीन

मारी-मारी भले ही घूमे, लेकिन फिर भी डूबकर तली में न पहुँचे।

जब तुम अपने-आप का दान करने के लिए कठिन श्रम करते हो, तब तुम भले हो

लेकिन तब भी तुम बुरे नहीं हो जब तुम अपने लाभ के लिए कठिन श्रम करते हो।

क्योंकि, जब तुम लाभ के लिए कठिन श्रम करते हो तब तुम केवल एक जड़ हो, जो पृथ्वी से लिपट कर उसका स्तन-पान करती है।

निश्चय ही, फल जड़ से नहीं कह सकते, "तुम भी मेरे समान बनो—परिपक्व, सरस, और दूसरों को अपना सब-कुछ दे देने को प्रस्तुत।"

क्योंकि फल की आवश्यकता है देना, और जड़ की आवश्यकता है लेना।

तुम भले हो जब तुम अपने वार्त्तालाप में पूर्णतः सजग हो।

लेकिन तब भी तुम बुरे नहीं हो जब तुम सोते हो और तुम्हारी ज़बान अनर्गल प्रलाप करती है।

और अनर्गल प्रलाप भी दुर्बल जिह्वा को सबल बना सकता है।

तुम भले हो जब तुम अपने लक्ष्य की ओर दृढ़ता और साहस-पूर्वक पैर बढ़ाते हो।

लेकिन तब भी तुम बुरे नहीं हो जब तुम उस तरफ़ लंगड़ाते-लंगड़ाते जाते हो।

लंगड़ाते हुए जाने वाले लोग भी पीछे की तरफ नहीं जाते।

लेकिन जो मज़बूत और फुर्तीले हैं, उन्हें चाहिए कि इसे अपनी कृपा समझकर, किसी लंगड़े के सामने लंगड़ाने न लगें।

तुम अनगिनत तरीकों से भले हो, लेकिन यदि तुम भले नहीं हो, तो बुरे भी नहीं हो।

सिर्फ आवारा और आलसी हो।

अफसोस, हरिण कछुए को अपनी फुर्ती नहीं सिखा सकता।

विराट स्व-रूप की प्राप्ति की आकांक्षा में तुम्हारी भलाई निहित है और ऐसी आकांक्षा प्राणि-मात्र में है।

लेकिन तुम में से, कुछ मे, यह आकांक्षा एक पूर है जो पर्वत-प्रदेश के गुप्त संदेश और वन-उपवन के मधुर संगीत को अपने में भरे हुए, जोर-शोर से समुद्र की ओर दौड़ा जा रहा है।

और दूसरों में यह आकांक्षा एक उथली सरिता है जो समुद्र-तट पर पहुँचने के पहले बल खाती,घूमती-फिरती, मंथर-गति से विलगती जाती है।

लेकिन जिस व्यक्ति की आकांक्षाएँ अधिक हैं, वह अल्प-आकांक्षा वाले से न कहे, "तुम सुस्त और रुक-रुक जाने-वाले क्यों हो?"

क्योंकि कोई सचमुच भलामानस नंगे से नहीं पूछता, "तुम्हारे कपड़े कहाँ हैं?" न किसी बे-घरबार से पूछता है, "तुम्हारे घर-बार को क्या हुआ?"

और यदि तुम रात्रि की प्रशांतता में ही सुनो तो तुम उन्हें नीरवता में यह कहते हुए सुनोगे :

"हे हमारे ईश्वर, हमारा ही पंखों वाला स्वरूप हममें यह तेरी ही इच्छा है जो इच्छा करती है।

"हममें यह तेरी ही कामना है जो कामना करती है।

"हममें यह तेरी ही प्रेरणा है जो हमारी रात्रियों को, जो तेरी हैं, दिवसों में परिवर्तित कर देती है, जो कि तेरे ही हैं।

"हम तुझसे किसी भी चीज़ की याचना नहीं कर सकते, क्योंकि तू हमारे अभावों को उनके जन्म लेने से पूर्व ही जानता है :

"तू ही हमारी आवश्यकता है, और हमें अपने-आप को अधिक-से-अधिक देकर तू हमें सब-कुछ दे देता है।"

: २४ :

मौज-बहार

तब एक वैरागी, जो वर्ष में केवल एक बार नगर में आता था, आगे आया और बोला :

हमसे मौज-बहार के विषय मे कुछ कहो।

और उसने उत्तर दिया :

मौज-बहार एक मुक्ति-गान है,
लेकिन यह मुक्ति नही है।
यह तुम्हारी कामनाओं का फूलना है,
लेकिन यह उनका फल नहीं है।
यह एक गहराई है जो ऊँचा चढ़ने के लिए पुकारती है,
लेकिन यह स्वयं न गहरी है, न ऊँची।

यह पिंजर-बद्ध का उड़ उठना है,
लेकिन यह परिधि से सीमित दूरी नहीं है।
हाँ, वास्तव में, मौज-बहार मुक्ति-गान है।

और, मैं चाहता हूँ, तुम हृदय की सम्पूर्णता से इसे गाओ, लेकिन यह नहीं चाहता कि गाने में अपने हृदयों को गँवा दो।

तुम में से कुछ युवक मौज-बहार की इस प्रकार खोज करते फिरते हैं, मानो यही सर्वस्व है, और उनकी टीका तथा निन्दा की जाती है।

मै उनकी न टीका करूँगा, न निंदा। मै उन्हें मौज-बहार की खोज करने दूँगा।

क्योंकि उन्हे मौज-बहार प्राप्त होगी, परंतु वह अकेली नहीं।

उसकी सात बहनें है और उनमे सबसे छोटी भी मौज-बहार से अधिक सुंदर है।

क्या तुमने उस आदमी के बारे में नहीं सुना जो कुछ जड़ों की खोज में भूमि खोद रहा था और उसे मिल गया एक ख़ज़ाना ?

और तुम मे से कुछ बड़े-बूढ़े मौज-बहार को इस प्रकार पछतावे के साथ याद करते हैं, मानो उन्होंने नशे की हालत में ग़लतियाँ की हों।

लेकिन पछतावा मन पर बादलों का घिर आना है, पवित्रीकरण नहीं।

उन्हे अपनी मौज-बहार कृतज्ञता से याद करनी चाहिए, जिस प्रकार वे सुकाल में काटी हुई फ़सल को याद करते है।

फिर भी यदि पछतावे में सुख पाते है तो वे अवश्य यह सुख-लाभ करे।

और तुम में ऐसे भी है जो न तो मौज-बहार की खोज करने योग्य तरुण हैं, न उसकी याद करने योग्य बुड्ढे।

और खोज करने और याद करने के डर से वे सारी

मौज-बहार को तिलांजलि दे देते हैं, कि वे कहीं आत्मा की उपेक्षा न करने लगें या उसके प्रति अपराध न कर बैठें।

लेकिन उनके त्याग में भी उनकी मौज-बहार है।

इस तरह उनके भी हाथ एक ख़ज़ाना लगता है, यद्यपि वे काँपते हाथों से जड़ों की खोज में खुदाई करते है।

लेकिन, मुझे बताओ, वह कौन है जो आत्मा के प्रति अपराध कर सके?

क्या कोयल रात्रि की निस्तब्धता और जुगनू तारामण्डल के प्रति कोई अपराध करते हैं?

और क्या तुम्हारी ज्योति-शिखा और धुआँ क्या पवन के लिए भार-रूप बन सकते हैं?

क्या तुम समझते हो कि आत्मा एक लहर-हीन जल-कुण्ड है जिसे तुम लकड़ी से खंखोल सकते हो?

मौज-बहार को अस्वीकार करके तुम अपने अस्तित्व के अवकाश में वासना का संचय करते रहते हो।

कौन जानता है कि जो आज छोड़ी हुई जान पड़ती है, वही कल की प्रतीक्षा कर रही है।

और तुम्हारा शरीर भी अपनी विरासत और उचित आवश्यकताओं से अवगत है और वह धोखा नहीं खा सकता।

और तुम्हारा शरीर तुम्हारी आत्मा का सितार है।

और यह तुम्हारे हाथ की बात है कि तुम उससे मधुर स्वर झंकृत करो या बेसुरी आवाज़े निकालो।

और अब ज़रा अपने हृदय में प्रश्न करो, "मौज-बहार में जो भला है, उसे उससे विलग कैसे करेंगे जो भला नहीं है ?"

अपने खेतों और बाग़ीचों में जाओ, और तुम जान पाओगे कि मधु-मक्खी की मौज-बहार फूलों से मधु-संचय करने में है।

लेकिन फूलों की भी मौज-बहार मधु-मक्खियों को मधु-दान करने में है।

क्योंकि, मधु-मक्खी के लिए फूल जीवन-स्रोत है।

और फूल के लिए मधु-मक्खी प्रेम की संदेश-वाहिका है।

और मधु-मक्खी और फूल दोनों के लिए मौज-बहार का देना और लेना आवश्यकता और परमानन्द है।

हे आरफालीज़-निवासियो, अपनी मौज-बहार में फूलों और मधु-मक्खियों के समान बनो।

: २५ :

सुन्दरता

और एक कवि ने कहा :

हमसे सुन्दरता के सम्बंध मे कुछ कहो।

और उसने उत्तर दिया :

तुम सुन्दरता को कहाँ खोजोगे, और तुम उसे कैसे पाओगे, जब तक कि वह स्वयं ही तुम्हारा पथ और तुम्हारी पथ-प्रदर्शिका न बने ?

और तुम उसका वर्णन कैसे करोगे, जब तक कि वह स्वयं ही तुम्हारी वाणी को बुनने वाली न बने ?

पीड़ित और आहत कहते हैं, "सुन्दरता दयालु और मृदुल है।

"तरुण माता के समान अपने गौरव पर अर्द्ध-लज्जित वह हमारे बीच विचरण करती है।"

और कामी कहते है, "नहीं, सुन्दरता शक्तिशाली है और डरने की वस्तु है।

"वह तूफ़ान की तरह हमारे नीचे की पृथ्वी और हमारे ऊपर के आकाश को हिला डालती है।"

थके और परेशान कहते हैं, "सुन्दरता कोमल काना-फूँसी की सृष्टि है। वह हमारी आत्मा में बोलती है।

"छाया के भय से काँपने वाली मन्द ज्योति के समान उसकी वाणी हमारी नीरवताओं को आत्म-समर्पण करती है।"

लेकिन बेचैन कहते है, "हमने उसे पर्वतों में गरजते सुना है।

"और उसकी गरज के साथ टापों की आवाज़, पंखों की फड़फड़ाहट और सिंहों की दहाड़ हमने सुनी है।"

रात में नगर के पहरेदार कहते है, "उषा के साथ सुन्दरता पूर्व दिशा से उदय होगी।"

और दोपहर में मज़दूर और राहगीर कहते हैं, "हमने उसे संध्या के झरोखों से पृथ्वी पर झाँकते देखा है।"

शीत-काल में बर्फ से घिरे-हुए कहते हैं, "वह बसंत ऋतु के साथ गिरिशिखरों पर कूदती हुई आएगी।"

और ग्रीष्म-काल की गरमी में खेत काटने वाले कहते हैं, "हमने उसे पतझड़ के पत्तों के साथ नाचते देखा है, और उसके बालों पर हमने बर्फ के कण बिखरे देखे है।"

ये सब बाते तुमने सुन्दरता के विषय में कही हैं;

लेकिन, वास्तव में, तुमने ये बातें उसके विषय में नहीं, अपनी अतृप्त आकांक्षाओं के विषय में कही हैं।

और सुन्दरता आकांक्षा नहीं, परमानन्द है।

यह न तो तृषाकुल कंठ है, न याचना के लिए फैला हुआ खाली हाथ;

बल्कि एक प्रज्ज्वलित हृदय और एक मंत्र-मुग्ध चित्त।

यह न तो वह प्रतिमा है जिसे तुम देख सको और न वह गान जिसे तुम सुन सको;

बल्कि एक ऐसी प्रतिमा जिसे तुम देखते हो यद्यपि तुम अपनी आँखें बन्द कर लेते हो और एक ऐसा गान जिसे तुम सुनते हो यद्यपि अपने कान बन्द कर लेते हो।

यह न तो कुरेदी हुई छाल का रस है और न नख के साथ जुड़ा हुआ पंख,

बल्कि सदैव फूली रहने वाली एक वाटिका और सदैव उड़ते रहने वाले देवदूतों का एक समूह।

आरफालीज-निवासियो, सुन्दरता जीवन है—जब कि जीवन अपने पवित्र मुख का अवगुण्ठन हटा लेता है।

लेकिन तुम जीवन हो और तुम अवगुण्ठन हो।

सुन्दरता, दर्पण मे अपने-आपको देखती रहने वाली अमरता है।

लेकिन तुम ही अमरता हो और तुम ही वह दर्पण हो।

: २६ :

धर्म

और एक बूढ़े पुजारी ने कहा :

हमसे धर्म के सम्बन्ध में कुछ कहो।

और उसने कहा :

क्या मैंने आज किसी अन्य के सम्बन्ध में कहा है ?

क्या सकल कर्म और चिंतन, और वह जो न कर्म है न चिंतन, बल्कि हृदय में सदैव—उस समय भी जिस समय हाथ पत्थर गढ़ रहे हों या करघा चला रहे हों—प्रस्फुटित होने वाला आश्चर्य और चमत्कार धर्म नहीं है ?

कौन अपने धर्म को कर्म से और विश्वास को व्यवसाय से अलग कर सकता है ?

कौन अपने क्षणों को अपने सामने यह कहते हुए फैला सकता है, "यह परमात्मा के लिए और यह मेरे अपने लिए; यह मेरी आत्मा के लिए और यह दूसरा मेरी काया के लिए ?"

तुम्हारे सारे क्षण स्व-रूप से स्व-रूप तक आकाश में उड़ने वाले पंख हैं।

जो नैतिकता को अपना श्रेष्ठतम वस्त्र मानकर पहनता

है उसे नंगे फिरना श्रेयस्कर है।'

पवन और धूप उसके शरीर में छेद नहीं करेंगे।

और जो अपने व्यवहार की नीति-शास्त्र से व्याख्या करता है, वह अपने गाने-वाले पक्षी को पिंजरे में बन्दी करता है।

स्वतन्त्रता संगीत सीखचों और बंधनों मे से नहीं आती।

और वह जिसके लिए पूजा एक खोली जाने वाली और फिर बन्द भी की जाने वाली खिड़की है, अभी अपनी आत्मा के भवन मे गया ही नहीं है जिसकी खिड़कियाँ उषा-काल से उषा-काल[1] तक हैं।

तुम्हारा दैनिक-जीवन तुम्हारा मंदिर और तुम्हारा धर्म है।

जब-जब तुम उसमें प्रवेश करो अपना सब-कुछ साथ ले जाओ—

ले जाओ हल और कुदाली और हथौड़ा और बाँसुरी—

वे सब चीजे जिनका निर्माण तुमने अपनी आवश्यकता या प्रसन्नता के लिए किया है।

क्योंकि, ध्यानावस्थित स्थिति मे तुम अपनी सफलताओं से ऊपर नहीं उठ सकते, न अपनी विफलताओं से नीचे गिर सकते हो।

और अपने साथ सब आदमियों को ले जाओ।

क्योंकि, पूजा में तुम उन लोगों की आशाओं से ऊपर

---

[1]आठों पहर।

नहीं उड़ सकते, न उनकी निराशाओं से अधिक दीन हो सकते हो।

और अगर तुम ईश्वर को जानना चाहते हो तो पहेलियाँ हल करनेवाले मत बनो।

बल्कि अपने चारों ओर निगाह डालो, और तुम उसे अपने बच्चों के साथ खेलते पाओगे।

और आकाश पर निगाह डालो, तुम उसे बादलों में विचरण करते, बिजली मे बाँहे फैलाते और वर्षा की धार में उतरते पाओगे।

तुम उसे फूलों में मुस्कराते और फिर ऊपर उठते और वृक्षों मे अपने हाथों को हिलाते देखोगे।

: २७ :

मृत्यु

तब अलमित्रा ने कहा :

अब हम मृत्यु के विषय मे पूछते है।

और उसने कहा :

तुम मृत्यु का भेद जानना चाहते हो;

लेकिन तुम जीवन के अन्तर्प्रदेश में खोजे बिना उसे कैसे पाओगे ?

वह उलूक, जिसकी रात्रि-सीमित आँखें दिन के लिए अन्धी हैं प्रकाश के रहस्य का पर्दा नहीं हटा सकता।

यदि तुम वास्तव में मृत्यु की आत्मा को देखना चाहते हो तो जीवन की काया के सामने अपने हृदय को खोल कर रख दो।

क्योंकि जीवन और मृत्यु एक हैं, जैसे नदी और समुद्र भी एक हैं।

तुम्हारी आशाओं और अभिलाषाओं की गहराई में तुम्हारा 'उस पार'[1] का नीरव ज्ञान छिपा है।

---

१. मृत्यु का।

और बर्फ से दबे हुए बीज की भाँति तुम्हारा हृदय बसंत के स्वप्न देखता है।

स्वप्नों का विश्वास करो, क्योंकि उनमें अमरता का द्वार छिपा है।

तुम्हारा मृत्यु से डरना गड़रिये के उस राजा के सम्मुख उपस्थित होने में काँपने के समान है जिसका हाथ उसका सम्मान करने के लिए उस पर पड़ने वाला है।

क्या गड़रिया उस कंपन के अंतर्गत हर्षित नहीं है कि वह राजा का दिया हुआ चिन्ह धारण करेगा?

फिर भी क्या वह अपने कम्पन की ओर अधिक ध्यान नहीं देता?

क्योंकि मरना क्या है—वायु में नंगा होकर खड़ा होना और पिघल कर धूप में समा जाना।

और श्वास-प्रश्वास का बंद होना क्या है—साँस को बेचैन ज्वार-भाटों से मुक्त करना ताकि वह ऊपर उठे, फैले और भार-हीन होकर ईश्वर को खोजे।

जब तुम नीरवता की नदी का पानी पियोगे, केवल तब तुम वास्तव में गाओगे।

और जब तुम पर्वत-शिखर पर पहुँच चुकोगे, तब तुम चढ़ना प्रारम्भ करोगे।

और जब पृथ्वी तुम्हारे शरीर के सारे अवयवों को अपने में लीन करेगी, तब तुम वास्तव में नाचोगे।
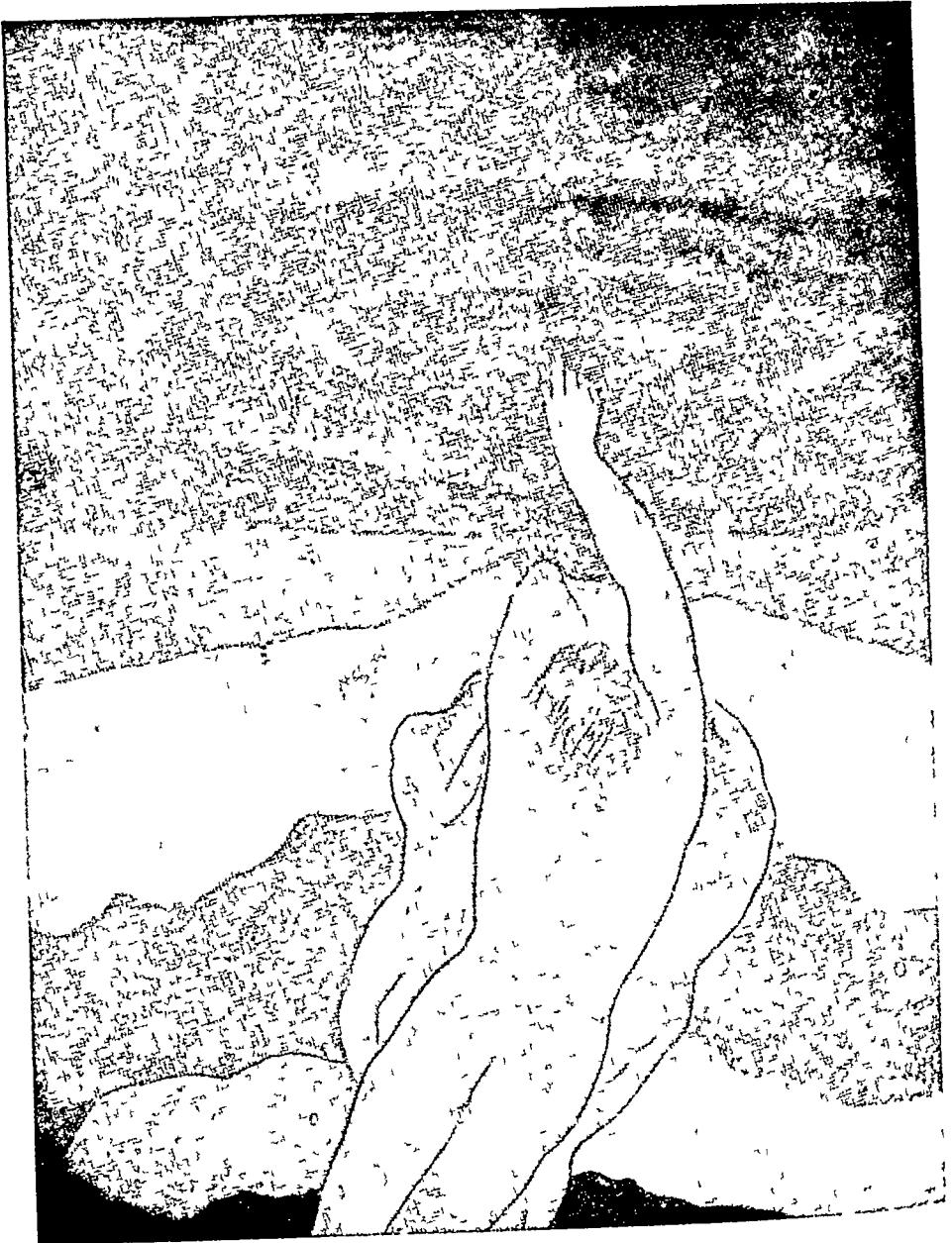
: २८ :

विदा

और अब साँझ हो गई थी।

और ब्रह्मवादिनी अलमित्रा ने कहा :

मुबारिक हो आज का दिन, यह स्थान और तुम्हारी आत्मा जिसने अमृत-वाणी का पान कराया।

और उसने कहा :

क्या यह मैं था, जो बोला ?

क्या मैं भी एक श्रोता नहीं था ?

तब वह मंदिर की सीढ़ियों से नीचे उतरा, और सब लोगों ने उसका अनुगमन किया। और वह अपने जहाज़ पर पहुँचा और उसकी छत पर खड़ा हो गया;

और लोगों की ओर फिर मुँह करके, वह ऊँचे स्वर में बोला :

ऑरफ़ालीज़ के निवासियो, हवा मुझे तुमसे विदा लेने को कहती है।

मैं जाने के लिए हवा से कम उतावला हूँ। फिर भी मुझे जाना ही है।

हम परिव्राजक, अति-एकान्त-पथ के चिर-शोधक, वहाँ

दूसरा दिन शुरू नहीं करते जहाँ हमने एक दिन समाप्त किया था; और कोई सूर्योदय हमे वहाँ नहीं पाता जहाँ सूर्यास्त ने हमें छोड़ा था।

जिस समय कि पृथ्वी भी सोती है, हम यात्रा करते हैं।

हम सुदृढ़ विटप के बीज हैं, और जब हम पक जाते हैं तथा हमारे हृदय पूर्ण हो जाते हैं तब हम वायु के हवाले कर दिये जाते हैं, और बिखरा दिये जाते हैं।

तुम्हारे बीच मेरे दिन संक्षिप्त थे, और मेरे बोले हुए शब्द और भी संक्षिप्त :

लेकिन यदि मेरी वाणी तुम्हारे कानों मे मन्द पड़ जायगी और मेरा प्रेम तुम्हारी स्मृति से लुप्त हो जायगा, तब मैं फिर आऊँगा,

और अधिक समृद्ध हृदय से और आत्मा के अधिक आधीन रहने वाले ओठों से मैं बोलूँगा।

हाँ, मैं ज्वार के साथ लौटूँगा।

और भले ही मृत्यु मुझे ढक ले, और महामौन मुझे आच्छादित कर ले, फिर भी मै तुम्हारी बुद्धि की खोज करूँगा।

और मेरी खोज विफल नहीं होगी।

यदि जो कुछ मैंने कहा है, वह सत्य है तो वह सत्य स्पष्टतर वाणी और तुम्हारे विचारों से अधिक-से-अधिक आत्मीयता रखने वाले शब्दों मे अपने-आपको प्रकट करेगा।

आरफालीज़ के निवासियो, मैं वायु के साथ जा रहा हूँ,

लेकिन नीचे शून्यता में नहीं;

और यदि यह दिन तुम्हारे अभावों और मेरे प्रेम की पूर्णता नहीं है तो इसे किसी आने वाले दिन तक एक इकरार रहने दो।

मनुष्य के अभाव बदलते हैं लेकिन उसका प्रेम नहीं, और न उसकी यह इच्छा कि प्रेम उसके अभावों को संतुष्ट करे।

इसलिए, जानलो कि मैं महामौन से लौटूंगा।

वह कोहरा, जो सूर्योदय के समय खेतों मे केवल तुहिन-बिन्दु छोड़ कर बह जाता है, फिर उठेगा और एकत्रित होकर बादल बनेगा और तब वर्षा बन कर नीचे गिरेगा।

और मैं कोहरे से भिन्न प्रकार का नहीं रहा हूँ।

रात्रि की निस्तब्धता में मैंने तुम्हारी गलियों में विचरण किया है, और मेरी आत्मा ने तुम्हारे घरों में प्रवेश किया है।

और तुम्हारे हृदय की धड़कने मेरे हृदय मे थीं, और तुम्हारा श्वास-प्रश्वास मेरे मुख पर था, और मैं तुम सबको जानता था।

हाँ, मैं तुम्हारे आनन्द और तुम्हारी वेदना को जानता था, और तुम्हारी निद्रा में तुम्हारे स्वप्न मेरे स्वप्न थे।

और बहुधा मैं तुम्हारे बीच था, मानो पहाड़ों के बीच एक झील।

मैंने तुम्हारे शिखर और टेढ़े-मेढ़े उतार, और तुम्हारे विचारों और तुम्हारी कामनाओं के उड़ते हुए समूह भी प्रतिबिम्बित किये थे।

और मेरे मौन में तुम्हारे बच्चों की हंसी झरने बन कर और तुम्हारे नवयुवकों की आकांक्षाएँ नदियां बन कर आई थीं।

और जब वे मेरी गहराई में पहुँचीं थीं, तब भी उन झरनों और नदियों ने गाना बन्द नहीं किया था।

बल्कि उल्लासों से अधिक मधुर और आकांक्षाओं से महान् बन कर मेरे पास आए थे।

वह था तुम्हारे अन्तर का असीम;

वह विराट पुरुष, जिसमें तुम सब लोग कोष[1] और स्नायु-मात्र हो;

वह, जिसके महागान में तुम्हारा समस्त गान नीरव स्पंदन मात्र है।

उस विराट पुरुष में ही तुम विराट हो,

और उसके दर्शन में मैंने तुम्हारे दर्शन किये और तुम्हें प्यार किया।

क्योंकि ऐसी कौनसी दूरियों तक प्रेम पहुँच सकता है, जो उस विराट क्षेत्र में नहीं हैं?

कौनसे स्वप्न, कौनसी आशाएँ और कौनसी धारणाएँ उस उड़ान से बाज़ी मार सकती है?

तुम्हारे अन्तर का विराट पुरुष विशाल वृक्ष की भाँति फल-फूलों से आच्छादित है।

उसकी शक्ति तुम्हे पृथ्वी से बाँधती है, उसका सौरभ

---

१. प्राणि-विज्ञान का एक शब्द (cell)। जिनसे मिल कर प्राणी-मात्र का शरीर बनता है।

तुम्हें आकाश मे उठाता है और उसकी अक्षयता में तुम मृत्यु-हीन हो।

तुमसे कहा गया है कि शृंखला होते हुए भी तुम अपनी दुर्बलतम कड़ी के समान दुर्बल हो।

यह कथन अर्द्ध-सत्य मात्र है। तुम अपनी दृढ़तम कड़ी के समान दृढ़ भी हो।

तुम्हारे तुच्छतम कार्य से तुम्हारी माप करना, समुद्र की शक्ति की माप उसके फेन की अल्पता से करना है।

तुम्हारी विफलताओं के आधार पर तुम्हारे विषय में राय बनाना, ऋतुओं को उनकी परिवर्तनशीलता के लिए दोष देना है।

हॉ, तुम एक महासिंधु के समान हो,

और यद्यपि भार से लदे हुए जहाज़ तुम्हारे तटों पर ज्वार की प्रतीक्षा करते हैं, फिर भी, समुद्र के समान, तुम अपने ज्वारों को जल्दी नही बुला सकते।

और तुम ऋतुओं के समान भी हो,

और यद्यपि तुम अपने शिशिर मे अपने वसंत को अस्वीकार करते हो,

फिर भी तुम्हारे अंतर मे आराम करनेवाला वसंत नींद की खुमारी मे मुस्करा रहा है, और अपमान का अनुभव नहीं करता।

यह मत सोचो कि यह सब मैं इसलिए कह रहा हूँ कि बाद मे तुम एक-दूसरे से कहो, "उसने हमारी खूब प्रशंसा

की। उसने हममें भलाई मात्र ही देखी।"

मैं वही, शब्दों में केवल कह रहा हूँ, जो तुम्हारे विचार में तुम स्वयं जानते हो।

और शाब्दिक-ज्ञान क्या है -- शब्द-रहित ज्ञान की छाया मात्र ही तो।

तुम्हारे विचार और मेरी वाणी एक मोहर-बन्द याद-दाश्त की लहरें हैं,

जो तुम्हारे बीते हुए कलों का, और उन प्राचीन दिवसों का, जब पृथ्वी को न अपना न हमारा ज्ञान था, और उन रात्रियों का, जब उथल-पुथल में से पृथ्वी का उदय हुआ था, लेखा रखती है।

ज्ञानी पुरुष तुम्हे अपने ज्ञान मे से कुछ देने आए है। मैं तुम्हारे ज्ञान मे से कुछ लेने आया था :

और देखो मैंने वह पाया है जो ज्ञान से बढ़कर है।

वह है तुम्हारे अन्तर में स्व-जीवन को सदैव अधिकाधिक संचित करनेवाली चैतन्य-ज्योति,

जब कि तुम उसके विस्तार पर ध्यान न देकर, अपने झड़ने वाले दिनों के लिए शोक करते हो।

शरीरों में जीवन की खोज करनेवाला जीवन क़ब्र से डरता है।

यहाँ कब्रे हैं ही नहीं।

ये पहाड़ और मैदान एक पालना और एक सीढ़ी हैं।

जब कभी तम उस खेत में होकर गुज़रो जहाँ तुम्हारे

पूर्वज दफनाये गए थे—तो वहाँ ध्यान दो, तुम देखोगे कि वहाँ तुम और तुम्हारे बच्चे हाथ में हाथ लिये नृत्य कर रहे हैं।

निश्चय ही तुम बहुधा अनजाने ही खुशियाँ मनाते हो।

तुम्हारे पास और दूसरे आए है जिन्हें तुमने तुम्हारी श्रद्धा को स्वर्ण-आशाएँ बँधाने के बदले धन,सत्ता और कीर्त्ति दी है।

मैंने तुम्हे आशा से भी कम दिया है, और फिर भी तुम मेरे प्रति अधिक उदार रहे हो।

तुमने मुझे जीवन के प्रति मेरी उत्कट-पिपासा प्रदान की है।

वास्तव मे किसी व्यक्ति के लिए इससे महान् भेट नहीं हो सकती, जो कि उसकी सारी आकांक्षाओं को पिपासित ओठ और सारे जीवन को एक अविरल स्रोत में परिवर्तित कर दे।

और इसमे मेरा सम्मान और मेरा पुरस्कार निहित है कि—

जब कभी मै स्रोत पर पीने के लिए आता हूँ, तो मै स्वयं चेतन-जल को प्यासा पाता हूँ,

और जब कि मैं उसका पान करता हूँ, वह मेरा पान करता है।

तुममे से कुछ ने मुझे भेंट स्वीकार करने मे अभिमानी और अत्यधिक लज्जाशील समझा है।

मजदूरी लेने में मैं अवश्य अत्यन्त मानी हूँ,लेकिन भेंट लेने मे नही।

और जब तुम मुझे अपने साथ बैठा कर भोजन कराना चाहते थे, मैंने पहाड़ियों पर बेर खाये हैं,

और जब कि तुम ख़ुशी-खुशी मुझे आश्रय देना चाहते थे, मैं किसी मन्दिर के दालान में सोया हूँ,

किन्तु, क्या यह मेरे दिवस और मेरी रात्रि के प्रति तुम्हारी स्नेह-पूर्ण चिन्ता नहीं थी, जो मेरे मुख में भोजन को सुमधुर बनाती और मेरी निद्रा को मधुर स्वप्न प्रदान करती थी ?

इसके लिए मैं तुम्हें बहुत-बहुत आशीर्वाद देता हूँ।

तुम बहुत देते हो, और यह नहीं जानते कि कुछ देते भी हो।

वस्तुतः जो सहृदयता दर्पण में अपना मुख निरखती है, पत्थर बन जाती है।

और सत्क्रिया जो अपने को सुन्दर नामों से सम्बोधित करती है, अभिशाप की जननी बन जाती है।

और तुममें से कुछ ने मुझे एकान्त-प्रिय और अपनी ही एकान्तता में मदहोश कहा है,

और तुमने कहा है, "वह वन-वृक्षों से वार्तालाप करता है, लेकिन मनुष्यों से नहीं ;

"वह टेकरी के शिखर पर अकेला बैठता है और हमारे नगर को नीची नज़र से देखता है।"

और यह सत्य है कि मैं पर्वतों के शिखरों पर चढ़ा हूँ और मैंने दूर देशों में विचरण किया है।

खूब ऊपर चढ़े बिना, या काफी दूर गये बिना मैं तुम्हे देख कैसे पाता ?

दूर हुए बिना कोई वास्तव मे समीप हो ही कैसे सकता है ?

और तुममे से दूसरों ने शब्दों के बिना मुझसे कहा है :

"ओ अजनवी, अगम्य शिखरों के प्रेमी, तुम उन ऊँचाइयों मे क्यों रहते हो जहाँ गरुड़ अपना नीड़ बनाते हैं ?

"तुम अप्राप्य की तलाश क्यों करते हो ?

"किन तूफानों को तुम अपने जाल मे फँसाना चाहते हो ?

"और किन पवन-पक्षियों का तुम आकाश में शिकार करना चाहते हो ?

"आओ और हममें से एक बनो।

"नीचे उतरो और हमारी रोटियों से अपनी भूख मिटाओ और हमारी मदिरा से अपनी प्यास शान्त करो।"

अपने हृदय के एकान्त-वास मे उन्होंने ये बाते कहीं थीं;

लेकिन यदि उनका एकान्त और अधिक गहरा होता तो उन्हे मालूम होता कि मैं तुम्हारे हर्ष और शोक के रहस्य मात्र को खोज रहा था,

और आकाश मे विचरण करने वाले तुम्हारे विराट स्वरूपो का शिकार कर रहा था।

लेकिन शिकारी शिकार भी था;

क्योंकि, मेरे कितने ही बाण मेरे ही हृदय की खोज मे मेरे धनुष से छूटे थे।

और उड़ने वाला रेंगने वाला भी था;

क्योंकि, जब मेरे पंख धूप में फैलते थे, पृथ्वी पर उनकी छाया कछुए की तरह रेंगती थी।

और मैं विश्वासी, अविश्वासी भी था;

क्योंकि, प्रायः मैंने अपने ही घाव में अपनी अंगुली डाली है ताकि मैं तुममें अधिक विश्वास कर सकूँ और तुम्हारा अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकूँ।

और इस विश्वास और इस ज्ञान के बल पर मैं कहता हूँ—

तुम अपनी देह में बन्द नहीं हो, न घरों और खेतों से सीमित हो।

'तुम' जो है, वह पर्वतों से ऊपर निवास करता है और वायु के साथ भ्रमण करता है।

यह वह नहीं है जो गरमी के लिए धूप में रेंगता है और बचाव के लिए अंधेरे में बिल खोदता है,

बल्कि एक वस्तु है—मुक्त, एक चेतना जो पृथ्वी को आच्छादित करती है और आकाश-वायु में विचरण करती है।

यदि ये अस्पष्ट शब्द हों, तो उन्हे स्पष्ट करने की चेष्टा न करना।

अस्पष्टता और धुंधलापन सब वस्तुओं का आदि है, उनका अन्त नहीं,

और मेरी हार्दिक इच्छा है कि तुम मुझे आदि के समान ही याद रखो।
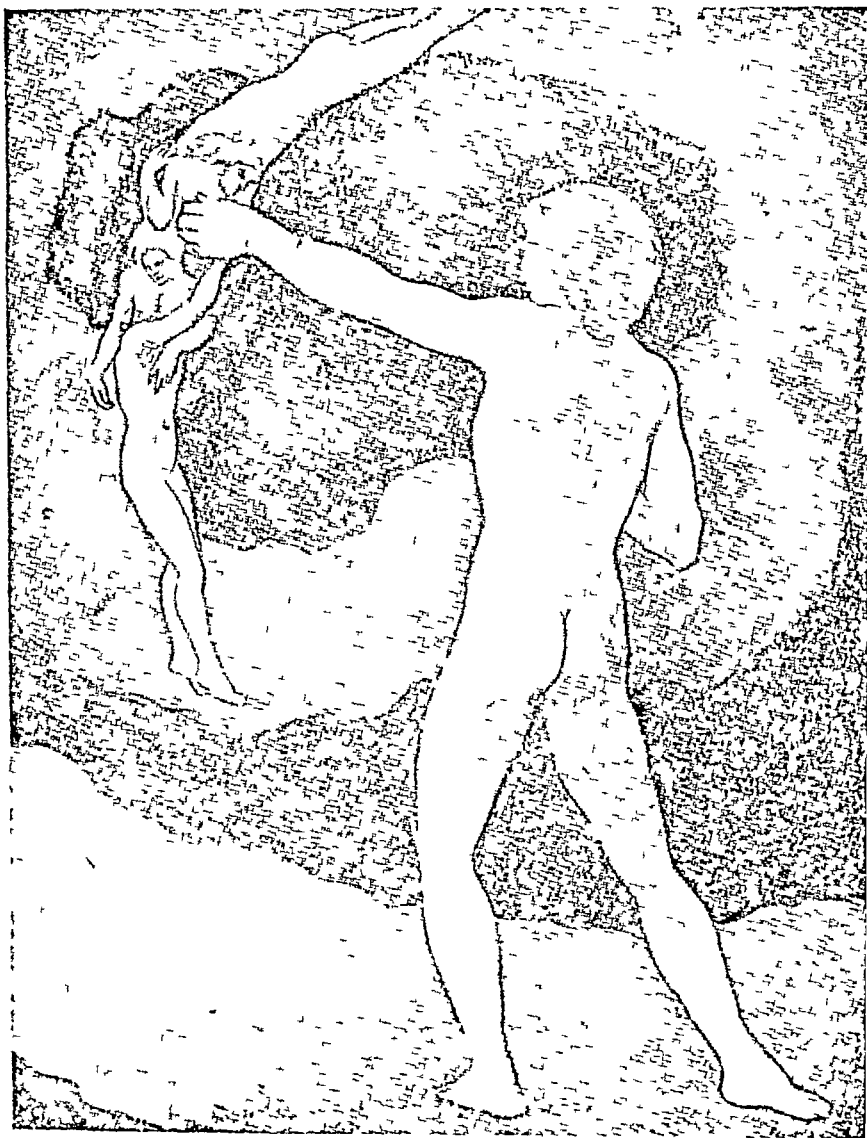
जीवन और जीवमात्र का गर्भाधान अंधियारे में ही होता है, उजाले में नहीं।

और कौन जाने उजाले की जीर्णावस्था का ही नाम अंधियारा हो ?

मै चाहता हूँ कि मुझे याद रखने में तुम यह याद रखो.

तुम्हारे अन्दर जो सबसे अधिक निर्बल और घबराया हुआ जान पड़े, वह सबसे अधिक बलवान और दृढ़ है।

क्या यह तुम्हारी श्वास नहीं है जिसने तुम्हारी हड्डियों के ढाँचे की रचना की है और उसे मज़बूत बनाया है ?

और क्या यह एक स्वप्न नही है,जिसे देखा है। इसकी याद भी तुममे से किसी को नही है, जिसने तुम्हारे नगर और उसमें जो कुछ है, उस सबका सृजन किया है ?

यदि तुम उस श्वास की तरंगे देख-भर सको तो तुम शेष सब-कुछ देखना बंद कर दोगे,

और यदि तुम उस स्वप्न की काना-फूँसी सुन सको तो तुम कोई दूसरी आवाज़ नहीं सुनोगे।

किन्तु, तुम न देखते हो न सुनते ही हो और यह अच्छा है।

तुम्हारी आँखों पर पड़ा हुआ परदा उन हाथों से हटेगा जिन्होंने उसे बुना था,

और वह मिट्टी जो तुम्हारे कानों में भरी हुई है उन अंगुलियों से छेदी जायगी जिन्होने उसे साना था।

और तुम देखोगे।

और तुम सुनोगे।

फिर भी तुम न अपने अब तक अन्धे रहने पर दुखी होगे और न बहरे रहने पर खेद करोगे।

क्योंकि, उसी दिन तुम सब वस्तुओं के भीतर किये प्रयोजनों को जान जाओगे,

और तुम अन्धकार को उसी प्रकार आशीर्वाद दोगे जिस प्रकार प्रकाश को।

ये बातें कहने के उपरांत उसने अपने चारों ओर दृष्टि डाली और देखा कि उसके जहाज़ का चालक अपनी पतवार संभाले कभी खुले पालों की ओर और कभी सुदूर मार्ग की ओर देख रहा है।

और उसने कहा :

मेरे जहाज़ का कप्तान धैर्यवान-अतिशय धैर्यवान है।

पवन चल रहा है, और पाल बेचैन हैं;

पतवार भी आज्ञा माँगती है;

फिर भी मेरा कप्तान चुपचाप मेरे मौन की राह देख रहा है।

और ये मेरे मल्लाह, जिन्होंने महासागर का समूह-गान सुना है, ध्यानपूर्वक मेरी बातें सुनते रहे हैं।

अब वे अधिक प्रतीक्षा नहीं करेंगे।

मैं तय्यार हूँ।

नदी समुद्र में पहुंच गई है, और एक बार पुनः महती माता अपने बालक को अपने वक्षःस्थल से लगा रही है।

अल्विदा, आरफालीज् के निवासियो।

यह दिन पूरा हो गया है।

यह उसी प्रकार मुँद रहा है जिस प्रकार कमल अपने आनेवाले कल के लिए मुँदता है।

हमें जो कुछ आज यहाँ मिला है, उसे हम अपने पास रक्खेंगे।

और अगर यह यथेष्ट न होगा, तो हम सबको फिर साथ आना पड़ेगा और दाता के सामने साथ हाथ फैलाने पड़ेंगे।

भूल मत जाना कि मैं तुम्हारे पास वापस आऊँगा।

कुछ ही समय उपरांत मेरी इच्छा दूसरे शरीर के लिए मिट्टी और पानी जमा करेगी।

और कुछ ही समय उपरांत, वायु पर एक क्षण विश्राम कर लेने पर, कोई दूसरी माता मुझे धारण करेगी।

विदा तुम से और उस तारुण्य से जो मैंने तुम्हारे साथ बिताया है।

यह तो कल ही हम स्वप्न में मिले थे।

तुमने मेरे एकान्त मे मेरे लिए गाया है, और मैंने आकाश मे तुम्हारी आकांक्षाओं की मीनार निर्मित की है।

किन्तु, अब हमारी नींद उड़ चुकी है, हमारा स्वप्न समाप्त हो चुका है, और अब प्रभात भी नहीं है।

मध्याह्न हमारे ऊपर है, और हमारी अर्द्ध-जागृति पूर्ण दिवस बन चुकी है; और हमे अलग होना ही चाहिए।

और यदि स्मृति के संध्याकाल मे हम फिर कभी मिले

तो हम अधिक बातें करेंगे और तुम मेरे लिए गूढ़तर गीत गाओगे।

और जब हमारे हाथ किसी दूसरे स्वप्न में मिलेंगे, तब हम आकाश में एक और मीनार निर्मित करेंगे।

इतना कहकर उसने मल्लाहों को इशारा किया और उन्होंने तुरन्त लंगर उठा लिये और जहाज को खोल दिया, और पूर्व दिशा की ओर प्रस्थान किया।

और उन लोगों के हृदय से एक चीख इस प्रकार निकली मानो एक ही हृदय से निकली हो, और सन्ध्या के धुंधलेपन में उठी और एक महान् दुन्दुभि-निनाद के समान समुद्र के ऊपर से ले जाई गई।

केवल अल्मित्रा, जबतक जहाज कोहरे मे छिप नहीं गया, उसे एकटक देखते हुए, चुप थी।

और जब सब लोग बिखर चुके थे तब भी वह उसके इस कथन को अपने हृदय मे याद करती हुई, समुद्र-तट पर अकेली खड़ी थी :

"और, कुछ ही समय उपरांत, वायु पर एक क्षण विश्राम कर लेने पर, कोई दूसरी माता मुझे धारण करेगी।"

— :समाप्त: —